श्री कृष्ण कृपा

सत्संग-सेवा-सुमिरन एवं सद्भावना का प्रकाश स्तम्भ

श्री कृष्ण कृपा संजीवनी

मासिक पत्रिका
सितम्बर 2023

लैस्टर गीता फैस्टिवल

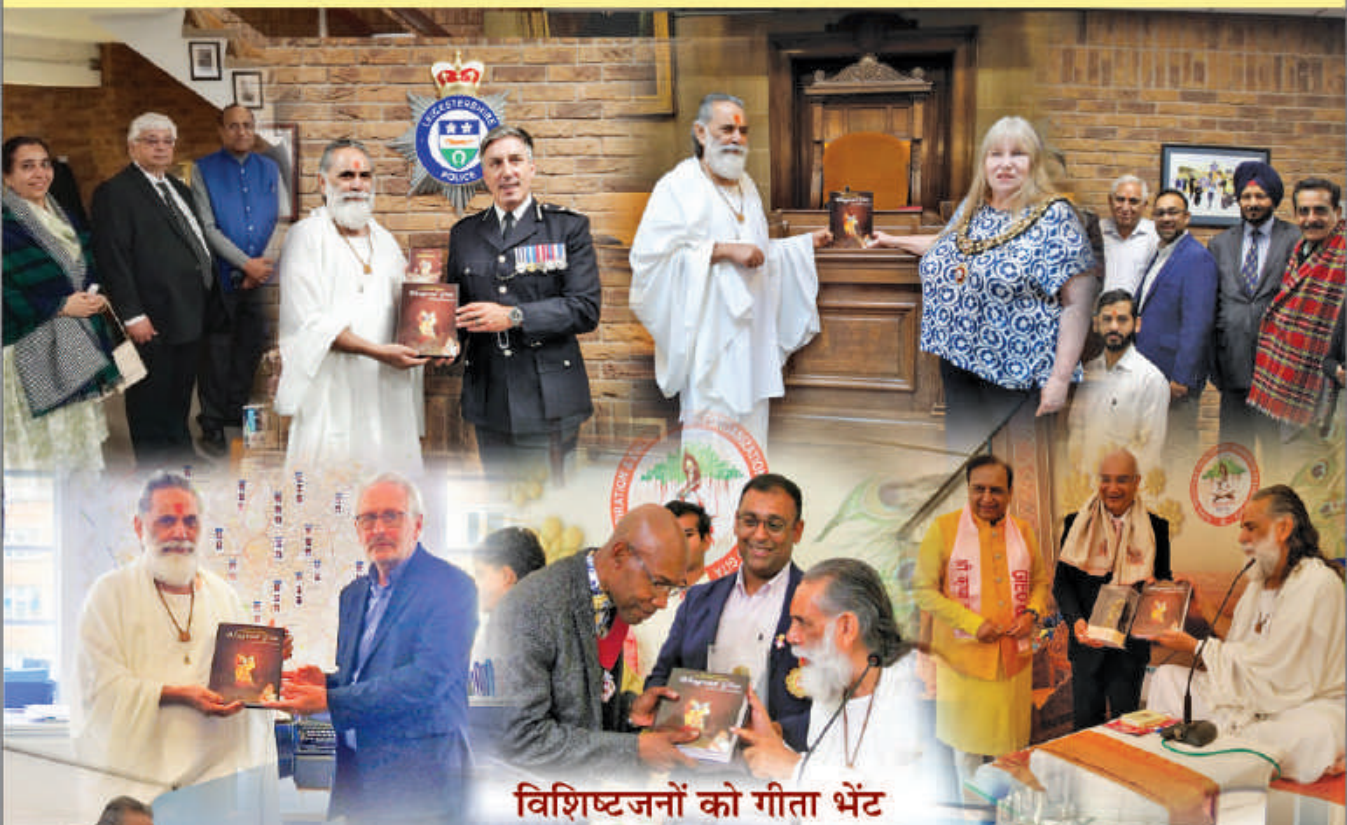

विशिष्टजनों को गीता भेंट

गिरि बापू जी को गीता

लैस्टर में यमुना जी के प्रति भाव

लैस्टर गीता उत्सव
आयोजक सिंगला परिवार

भारतीय उच्चायोग में कौंसलेट जनरल को गीता भेंट

लैस्टर गीता महोत्सव

ॐ

सत्संग, सेवा, सुमिरन
और सद्भावना का प्रकाश स्तम्भ

वर्ष-25
सितम्बर-2023
अंक-09

श्री कृष्ण कृपा संजीवनी

भाद्रपद
आश्विन
सम्वत्
2080 वि.

मंगलाचरण

मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी,
त्रिवेदभारतीश्वरी प्रमाणशासनेश्वरी।
रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोदकाननेश्वरी,
ब्रजेश्वरी ब्रजाधिपे श्रीराधिके नमोस्तुत॥12॥

–श्रीराधा कपाकटाक्ष स्तोत्रम्

भावार्थ: आप सभी प्रकार के यज्ञों की, सम्पूर्ण क्रियाओं की, स्वधा देवी की, सब देवताओं की, तीनों वेदों की स्वामिनी हैं, सम्पूर्ण जगत् पर शासन करने वाली हैं। आप रमा देवी, क्षमा देवी, आमोद-प्रमोद की स्वामिनी है, हे ब्रजेश्वरी! हे ब्रज की अधिष्ठात्री देवी श्रीराधिके! आपको मेरा बारम्बार नमस्कार है।

लक्ष्य अच्छा, भाव सच्चा
और विश्वास पक्का-
'श्री कृष्ण कृपा' स्वतः अनुभव होगी।

मुख्यालय
श्रीकृष्ण कृपा धाम, परिक्रमा मार्ग
वृन्दावन-281121 (मथुरा) उ.प्र.
फोन : 8899363611/22, 9368311113
E-mail : gieogita@gmail.com Website : gieogita.org

अधिष्ठाता : ठाकुर श्री श्री कृपा बिहारी जी
प्रेरणा-स्त्रोत : ब्रह्मलीन सद्गुरुदेव स्वामी श्री गीतानन्द जी महाराज
संस्थापक/संरक्षक : म.मं.गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज
मुद्रक / प्रकाशक : श्री नरेन्द्र कुमार-9354627999
सम्पादक : श्री गोपाल चतुर्वेदी

सदस्यता शुल्क

एकप्रति	: रु. 15/-
द्विवार्षिक	: रु 300/-
पंच वर्षीय	: रु 650/-
दस वर्षीय	: रु1200/-

गुरुदेव की पाती

श्री कृष्ण कृपा

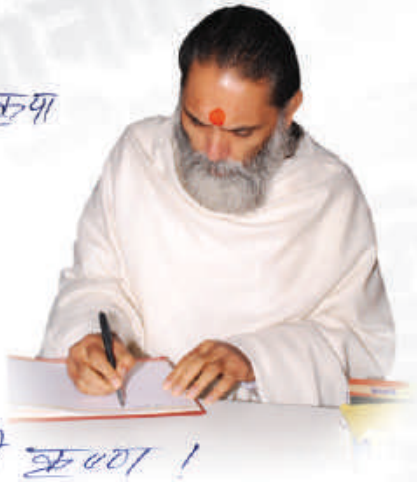

गीता जिज्ञासु साधक,

जय श्री कृष्ण !

सावधानी कल्याण पथ की साधना का मुख्य आधार मानी गई है। स्थित प्रज्ञ दर्शन तो यहाँ तक चेताता है कि साधन पथ में किसी भी अवस्था तक सावधानी - सजगता बनाए रखे। इन्द्रियाँ कब कहाँ किस अवस्था में फिर से विषयों की ओर आकर्षित हो जायें - निश्चित नहीं कहा जा सकता। समाधान है - युक्त आसीत मत्परः। मन को यथासंभव भगवान की निकटता अर्थात भगवद्भाव में रखने की दृष्टि अथवा दृढ़ता।

ध्यान रहे - मन तो रस का लोभी है। भगवद् भाव का रस शाश्वत है, श्रेष्ठतम है। सजग सावधान रह कर मानसिक दृढ़ता बनाये रख कर मन को भगवद् भाव की तन्मयता की स्थिति में लाओ। अभ्यास करो और फिर स्वयं अनुभव: भगवद् रस के समक्ष विषय रस की कहीं तनिक भी कोई स्थिति नहीं। वस्तुत: विषय रस का आकर्षण समाप्त भी तभी होगा, जब भगवद्-रस की अनुभूति मन कर लेगा।

भगवान कृष्ण के पावन अवतरण अवसर श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर आओ, कुछ ऐसा ही संकल्प जगायें, भगवद्भाव का दिव्य रस अनुभव में लायें; गीता पढ़ें - गीता पढ़ायें; हार्दिक शुभ कामनायें ;

जय श्री कृष्ण

सम्पादकीय...

जय श्री राधे

प्रिय पाठकवृन्द,

सुख की प्राप्ति मनुष्य के जीवन की मूल कामना रही है। हमारी अधिकांश चेष्टाएं, हमारे अधिकांश प्रयास सुख-प्राप्ति के उद्देश्य से ही होते है! अपने अपने प्रारब्ध, जीवन की परिस्थितियों और सामाजिक परिवेश के अनुसार हमारे सुखों का स्तर शारीरिक, मानसिक अथवा अध्यात्मिक हो सकता है! उदाहरण के तौर पर किसी के सुख का विषय स्वादिष्ट भोजन हो सकता है और किसी के सुख का विषय उपवास। भोजन से आसक्ति एवं उपवास के दिन किसी विशेष प्रकार के खाद्य पदार्थ का निषेध, अगर इन दोनों के मूल में यदि सुख-प्राप्ति की कामना है तो श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार दोनों ही बन्धन का कारण हैं, केवल उनके प्रकार भिन्न हैं! श्रीमद्भगवद्गीता के मूल सन्देश के अनुसार इस द्वन्द्वात्मक संसार में सुख और दु:ख दोनों का समावेश प्रत्येक के जीवन में है! सुख की कामना को स्वाभाविक मानने वाले मानव-मन को श्रीमद्भगवद्गीता की प्रेरणाएं प्रेरित करती हैं, कि हम जीवन में आने वाले कष्ट और संघर्षों को अस्वाभाविक ना मानें! समता का सन्देश देने वाले भगवान् श्री कृष्ण का जीवन स्वयं में एक जीवन्त प्रेरणा है! अनेकानेक दु:ख एवं संघर्ष जन्म से प्रयाण तक उनके जीवन में रहें। जेल में जन्म, कारागार में प्रताड़ित माता-पिता, अनेकानेक असुरों के आक्रमण होने के बाद भी श्री कृष्ण का जीवन उत्साह, हर्ष और उल्लास से परिपूरित रहा!

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन माह में आइए! हम प्रेरणा लें गीता जी के समता योग से! सुख और दु:ख के लिए अपने मन को विवेकपूर्ण ढंग से साधते हुए प्रार्थना करें कि हमारा जीवन भी उत्साहित हो, उल्लासित हो कृष्ण तत्त्व से! केवल सुख की कामना से बढ़े चलें-समता की दिव्य भावना की ओर!

! जय श्री कृष्ण!

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचरा॥5॥
महा-भूतानि अहङ्कारः, बुद्धिः अव्यक्तम्-एव च।
इन्द्रिाणि दश एकम् च, पञ्च च इन्द्रियगोचराः॥5॥

महातत्त्व पाँच और अहंकार यह, बुद्धि व प्रकृति कारण जो है।
दसों इन्द्रियाँ और मन एक भी, पाँचों विषय इन्द्रियों के सभी॥

इच्छा द्वेषः सुखम्-दुःखम्, सङ्घातः चेतना धृतिः।
एतत्-क्षेत्रम् समासेन, सविकारम्-उदाहृतम्॥6॥

इच्छा व द्वेष और सुख दुःख को,
पिण्ड इस देह का नजर आता जो।
धृति और जो प्राण शक्ति भी है,
विकारों सहित सार में क्षेत्र यह।।

(क्षेत्र के स्वरूप का कथन)

महाभूतानि	-	पाँच महाभूत
अहङ्कारः	-	अहंकार
बुद्धिः	-	बुद्धि
च	-	और
अव्यक्तम्	-	मूल प्रकृति
एव	-	भी
च	-	तथा
दश	-	दस
इन्द्रियाणि	-	इन्द्रियाँ
एकम्	-	एक मन
च	-	और
पञ्च	-	पाँच
इन्द्रियगोचराः	-	इन्द्रियों के विषय अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध-

(क्षेत्र के विकारों का कथन)

इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं सङ्घातश्चेतना धृति।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम्॥6॥

इच्छा	-	इच्छा,
द्वेषः	-	द्वेष,
सुखम्	-	सुख,
दुःखम्	-	दुःख,
सङ्घातः	-	स्थूल देह का पिण्ड,
चेतना	-	चेतना (और)
धृति	-	धृति- (इस प्रकार)
सविकारम्	-	विकारों से सहित
एतत्	-	यह
क्षेत्रम्	-	क्षेत्र
समासेन	-	संक्षेप में
उदाहृतम्	-	कहा गया है।

क्रमशः

'गीता ज्ञान संस्थानम्' - गीता जी की अवतरण स्थली धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में गीता जी की प्रेरणाओं को जन जन तक पहुँचाने हेतु निर्मित होने वाला अनूठा गौरवशाली केन्द्र! आओ जुड़ें जीओ गीता से, गीता ज्ञान संस्थानम् से!

7027001890, 9996551615

स्वामी रामतीर्थ दिग्दर्शन

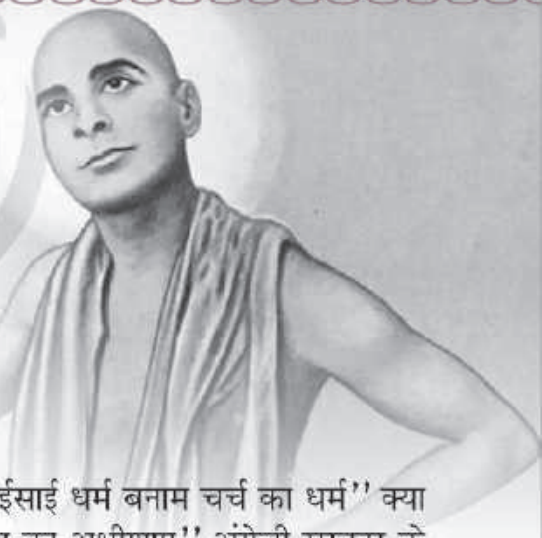

श्यामलाल कश्यप

गतांक से आगे...

महाराजा टिहड़ी गढ़वाल के आतिथ्य के समय एक डाक बंगले में उनके लिये दो थालियों में भोजन आता था, एक स्वामी जी के लिये, एक उनके अभिन्न मित्र जंगल के राजा (शेर) के लिये।

एक गुफा में विषैले जन्तु रहते थे। बाघ, शेर, कई व्यक्ति वहाँ मर चुके थे, राम वहाँ महीनों रहे, उन्हे काँटा तक नहीं चुभा।

पुष्कर को मगरमच्छों की झील (Crocodile Lake) में ये मगरमच्छों से घिरे, घन्टों स्नान करते रहे।

स्वामी राम ब्रह्म मुहूर्त में अपनी धर्म पत्नी को अद्वैत का अभ्यास कराते थे।

स्वामी राम ने केवल लिखने की प्रसन्नता के लिये लिखा। उन्होंने लगभग आठ खण्डों में भाषण दिये, सौ कविताऐं अंग्रेजी में, एक सौ पचास फारसी में, लगभग बारह सौ पत्र व कविताऐं लिखीं, लगभग पाँच सौ पृष्ठ अलिफ के भरे। वे Dynamics of Mind विश्व की महान् कृति लिखना चाहते थे। जिससे दुनियां वंचित रह गई।

ये शब्दों से खेलते थे। एक अंग्रेजी वाक्य को उन्होंने यूं समझाया-

God is no where (ईश्वर कहीं नहीं हैं)
God is now here (ईश्वर यहाँ हैं)।
राम तीर्थ को- Ram Truth लिखते।

1908 में जब स्वामी राम के प्रिय शिष्य श्रीमन्नारायण स्वामी जी ने उनके सम्पूर्ण वाङ्मय को प्रकाशित कराया तब उनके ये भाषण ''ईसाई धर्म बनाम चर्च का धर्म'' क्या ''पूंजीवाद का अभीशाप'' अंग्रेजी सरकार के रवैये के कारण प्रकाशित नहीं होने दिये। उनमें पाखण्ड के धर्म व पूंजीवाद की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं।

फैजाबाद के एक उन्मादी मुसलमान स्वामी राम को अपने वस्त्रों में चाकु छुपा कर मारने के लिये गया, स्वामी राम की मुस्कुराहट ने उसे सम्मोहित कर दिया वह स्वामी जी के पैरों में गिर गया, क्षमा माँगी और साधु हो गया।

So, I maintain labour is indestructible and can not be lost.

There are tongues in trees
books in the running books
Sermons in stones and
good is every thing.

Laws are for me. I was not made for laws and institutions.

If reincarnation is a truth, is it not the breaking up of family ties.

India is suffering like job. Be patient and prosperity will surely come.

- Swami Ram

क्रमशः

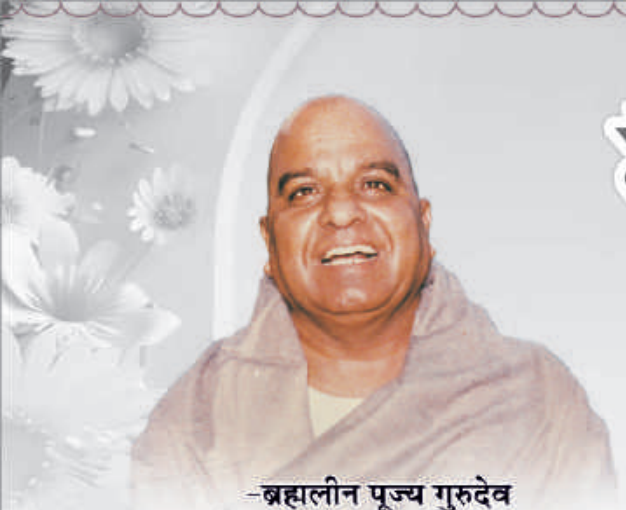

गीता चिन्तन

विचारवान् को शोक कैसा

-ब्रह्मलीन पूज्य गुरुदेव
स्वामी गीतानन्द जी महाराज (वीर जी)

गतांक से आगे...

तू-ही-तू! तू-ही-तू!! तू-ही-तू!!!

गीता-गौरव

"आओ! आओ! इस गीता को नित्य सङ्गिनी बनाओ, गीता का नित्य पाठ करो, पाठ करते-करते जितना हो सके इसका प्रवाह हृदय के अन्दर बहाने की चेष्टा करो, बड़ा कल्याण होगा।"

याद रखो- जीवन-यापन में, साधना में बड़ी-बड़ी बाधायें आती हैं। उनसे पार हो जाना सहज नहीं होता, पर भगवान् में चित्त लगाने से- भगवान् पर अनन्य निर्भरता होने से भगवान् की कृपा से मनुष्य सारी की सारी बड़ी से बड़ी कठिनाईयों से-बाधाओं से पार उतर जाता है। भगवान् जी कहते हैं-

'मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि"

-गीता 18/58

न हन्यते हन्यमाने शरीरे

—गीता 2/20

न जन्मे कभी न मरे आत्मा,
न होकर के फिर पैदा हो आत्मा।
अजन्मा अनादि रहे नित्य ही,
मरे न भले नष्ट हो देह भी॥

प्रिय गीताध्यायी! परमात्मा ने जड़ और चेतन, गुण और दोष मिलाकर संसार की रचना की है:-

'जड़ चेतन गुण दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।'

सृष्टिकर्ता ने बड़े विचित्र ढंग से जड़ (Matter) और चेतन (Energy) का मिलाप किया है। इन दोनों में आकाश और पाताल जितना अन्तर है। यथा-

1. एक जड़, विकार्य परिवर्तनशील एवं पाँच तत्त्वों से रचित है तो दूसरा चेतन, अविकार्य, अपरिवर्तनशील एवं स्वयंभू है,
2. एक परिच्छिन्न देशकाल की परिधि में जकड़ा हुआ है, तो दूसरा सर्वव्यापी होने से पूर्ण स्वतन्त्र है;
3. एक स्थानीय है तो दूसरा सार्वभौमिक;
4. जड़ (शरीर) को यदि वस्त्र कहें तो चेतन (आत्मा) उस वस्त्र को धारण करने वाला है, और
5. जड़ को निवास (Residence) तथा चेतन को निवासी (Resident) कहा जायेगा।

इसी तरह जड़ (शरीर) और चेतन (आत्मा) के भेद को गिरी-छिलके (Ketnal-Shell) घोड़ा-छकड़ा (Horse-Cart), पदार्थ पात्र (Contents-Container), ध्वनि-प्रतिध्वनि (Echo-Re Echo), बिम्ब-प्रतिबिम्ब (Object-Reflection) के दृष्टान्तों द्वारा भी भली-भाँति समझा जा सकता है।

क्रमशः

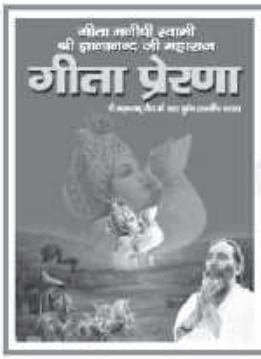

पूज्य महाराज श्री द्वारा
सम्पूर्ण गीता जी की
सारगर्भित सरल व्याख्या
गीता प्रेरणा
गीता को वर्तमान परिप्रेक्ष्य
में सरलता से समझने के लिये
एक बार अवश्य पढ़ें :

श्री गीता जी की श्लोकशः
सरल प्रासंगिक व्याख्या

गीता प्रेरणा

—गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

गतांक से आगे-

तेरहवाँ अध्याय (क्षेत्रक्षेत्रज्ञ विभाग योग)

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृय तिष्ठति।।

–गीता 13/13

श्री भगवान् बोले - वह सब ओर हाथ-पैर वाला, सब ओर नेत्र, सिर और मुख वाला तथा सब ओर कान वाला है; क्योंकि वह संसार में सबको व्याप्त करके स्थित है।

परमात्मा सर्वव्यापी है, वह कण-कण में है और कण-कण उसमें। सृष्टियाँ या लोक जितने भी हैं, परमात्मा से बाहर कुछ भी नहीं। सबको अपने भीतर समेट रखा है परमात्मा ने। निराकार रूप में तो वे सर्वव्यापी हैं ही; लेकिन उसमें भी विशेषता यह कि सब ओर हाथ-पैर, नेत्र, सिर, मुख और कान यह वास्तव में आश्चर्यजनक स्थिति है-

सब ओर हाथ और पैर उसके ही,
चहुँ ओर आँखें व सिर उसके भी।
हैं कान और मुँह उसके चारों तरफ,
समाया है उसमें ही सारा जगत्।।

विचारणीय संकेत! साकार रूप में किसी विग्रह के दर्शन कर रहे हैं यह न सोचें कि भगवान् केवल 'ये ही' हैं और 'यहीं' हैं। निराकार रूप में यदि भाव है तो यह नहीं कि वे तो कुछ कर ही नहीं सकते सुन ही नहीं सकते। यह श्लोक सगुण साकार और निराकार दोनों का अनूठा समन्वय है। कहीं से कुछ भी करने में समर्थ हैं परमात्मा! कहीं

प्रणाम

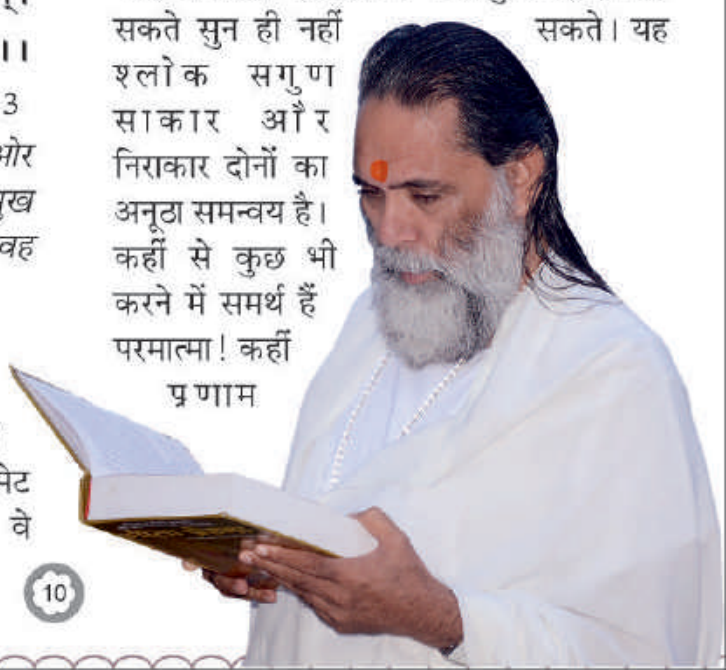

करो वहीं से स्वीकार कर सकते हैं और कोई चाहे तो कहीं भी सहायता के लिए आ सकते हैं-'**सर्वतः पाणिपादं**'

उनसे कुछ भी छिपा नहीं। सब कुछ उनके सामने हैं। वे सब देख रहे हैं- सर्वत्र उनके नेत्र हैं। कोई कहीं से भी चन्दन पुष्प आदि भेंट करे वहीं से वे स्वीकार कर सकते हैं। कोई वहीं से कुछ भोग लगाना चाहे, वे भोग लगाते हैं क्योंकि सब ओर उनके सिर और मुख हैं। कहीं से पुकारो, विश्वास करो, वे वहीं हैं-पुकार सुन रहे हैं।

यह श्लोक साधक के साधन पथ में विशेष सहयोग भूमिका निभाने वाला है। इस श्लोक से भीतर का विश्वास दृढ़ होता है। भगवान् यहीं हैं, हर स्थिति में मेरे पास हैं। भोग लगाते, पुकारते, प्रणाम करते या पूजा-पाठ आदि करते हुए यह भाव एक मजबूत सम्बल का काम करता है। वे हैं, देख रहे हैं भोग लगा रहे हैं, सुन रहे हैं- यही विश्वास साधना को तीव्रता देगा, मन को परमात्मा की ओर तथा उनकी कृपा शक्ति को अपनी ओर खींचेगा।

इसी भाव को और आगे देखें। गीता उपदेष्टा जानने योग्य तत्त्व का किस विलक्षण ढंग से निरूपण कर रहे हैं-

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च।।

-गीता 13/14

श्री भगवान् बोले - वह सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषयों को जानने वाला है, परन्तु वास्तव में सब इन्द्रियों से रहित है तथा आसक्ति रहित होने पर भी सबका धारण-पोषण करने वाला और निर्गण होने पर भी गुणों को भोगने वाला है।

निराकार में साकार-साकार में निराकार, सगुण में निर्गुण-निर्गुण में सगुण की अद्भुत झाँकी! इन्द्रियों से रहित है फिर भी वे सब कार्य जो इन्द्रियों से सम्पादित होते हैं- परमात्मा कर रहा है। सर्वशक्तिमान् है, सर्वसमर्थ है, उसके लिए असम्भव कुछ भी नहीं। भाव से पुकारो; भाव से कुछ भोग लगाओं, दिखाई नहीं देता तो भी पुकार सुनता है, आप द्वारा प्रदत्त भावपूरित भोग स्वीकारता है।

विषय इन्द्रियों के वह सब भोगता,
मगर है रहित इन्द्रियों से सदा।
आसक्ति रहित सबका पालन कर,
भोगे वह गुण है गुणों से परे।।

प्रायः यह अवधारणा रहती है कि मैं और मेरे के घेरे में जो हैं; उसी का पालन पोषण, उसी का ध्यान होता है। अपने परिवार के लिए कुछ भी किया जा सकता है, लेकिन उससे कठिन। बहुत लोग कह भी देते हैं कि यदि मोह नहीं होगा तो किसी के लिए कोई कुछ करेगा ही क्यों? इस श्लोक में '**असक्तं सर्वभृच्चैव**' पद इस विषय की दिव्य प्रेरणा है। सम्पूर्ण सृष्टि चींटी से हाथी और सामान्य इन्सान से ब्रह्मा जी तक सबका पालन करने वाला परमात्मा है, लेकिन कोई आसक्ति नहीं।

सभी गुण उनसे निकले हैं। गुणों के स्रोत स्वयं परमात्मा हैं। भक्त की कोई अच्छाई उन्हें प्रसन्न भी करती है। **अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च** (9/24)। यज्ञादि सब कर्मों का भोक्ता और स्वामी मैं हूँ- ऐसा स्वयं भगवान् कह चुके हैं; यह सब होते हुए भी वे इनसे लिप्त नहीं, अतीत हैं, निर्लिप्त है, गुणों को भोगते हुए भी निर्गुण हैं।

आइये पूर्ण जिज्ञासा के साथ एकाग्रतापूर्वक जानने योग्य परमात्मा के विषय में आगे और देखें एवं जानने का प्रयास करें-

क्रमशः

आचार्य भगवान् श्री श्रीचन्द्र जी

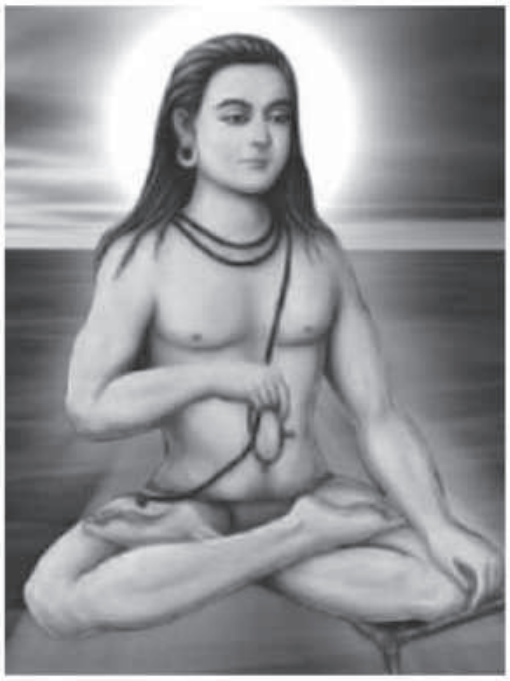

– आचार्य अशोक कुमार जोशी

वर्तमान का आध्यात्मिक जगत् भगवान् श्री श्रीचन्द्र जी के नाम से सुपरिचित है। उदासीन सम्प्रदाय की स्थापना के साथ-साथ आपने बड़े विषम समय हिन्दू सनातन धर्म की रक्षा का बहुत बड़ा उद्योग किया।

भगवान् श्री श्रीचन्द्र जी का आविर्भाव सं0 1551 वि0 भाद्रपद शुक्ल नवमी के दिन तलवण्डी ग्राम में हुआ। भारत विभाजन के पश्चात् यह स्थान पश्चिमी पाकिस्तान में चला गया। यह लाहौर से लगभग 80 किमी0 पश्चिम में है। अब यह ननकाना साहब नाम से प्रसिद्ध है। आपके पिता गुरु नानकदेव एवं माता सुलक्षणा देवी थी। आप भगवान् शंकर के अवतार माने जाते हैं। अवतारी पुरुषों की लीलाऐं आविर्भाव के समय से ही युग परिवर्तन की सूचनाएँ देती है।

भगवान् श्री श्रीचन्द्र जी अपनी छात्रावस्था से ही कश्मीर को सुशोभित करने लग गये थे। स्वल्प समय में ही आपका असाधारण वैदुष्य प्रस्फुटित हो गया था। उस समय के दिग्गज विद्वान् भी आपके गम्भीर अध्ययन एवं तर्क कौशल का लोहा मानने लग गये। अध्ययन पूर्ण हो जाने पर भगवान् जंगलों की नीरवता में सामयिक समस्याओं के सुलझाने का उपाय सोचा करते। भगवान् ने यह निर्णय कर लिया था कि जब तक मैं चतुर्थाश्रम ग्रहण नहीं कर लेता तब तक मैं अपने विराट संकल्प की पूर्ति नहीं कर पाऊँगा। कश्मीर में उन दिनों अविनाशी मुनि की धूम मची हुई थी। यूँ तो अविनाशी मुनि भारत भर में पद यात्रा करते हुए धार्मिक उपदेशों के बहाने जनता में संगठन की भावना भर रहे थे।

सम्वत् 1575 में अमरनाथ की यात्रा में अविनाशी मुनि कश्मीर पधारे थे। उनके उपदेशों एवं उपकारों को सुनकर श्री श्रीचन्द्र जी ने उनसे दीक्षा लेने का निश्चित कर लिया। आवश्यक विचार विनियम के अनन्तर उन्होंने मुनि जी से दीक्षा ले ली। दोनों की चिर अभिलाषा पूर्ण हो गयी। अविनाशी मुनि राष्ट्र के एक सच्चे सेवक की खोज में थे और इधर श्री भगवान् राष्ट्र की सेवा का अवसर खोज रहे थे।

अब भगवान् श्री श्रीचन्द्र ने अपने गुरुवर के आदेशानुसार पूरे भारतवर्ष की यात्रा का कार्यक्रम बनाया। सम्वत् 1858 तक अपनी

यात्रा पूरी करके भगवान् कश्मीर लौटे और निरन्तर 7 वर्ष तक वहीं रहे। उन्हीं दिनों सभी वेदों पर श्रीचन्द्र भाष्य की भी रचना हुई। सम्वत् 1595 में भगवान् कश्मीर से पेशावर चले गये। पेशावर से काबुल चले गये। वहाँ से बिलोचिस्तान होते हुए वापस पेशावर लौट आए।

सम्वत् 1600 में भगवान् हरिद्वार पधारे। वहाँ कुछ दिन ठहरकर नगर ढढ्ढा पहुँचे। वहाँ हिंगलाज देवी के दर्शन करने के लिए भक्तगिरि महात्मा अपने 360 शिष्यों के साथ पधारे और भगवान् की अद्‌भुत शक्तियों से प्रभावित होकर पूरे दल-बल के साथ शिष्य हो गये। भगवान् श्री श्रीचन्द्र ने उसका नाम भक्त भगवान् रखा।

कश्मीर पहुँचकर भगवान् ने उस समय के मुसलमान शासक याकूब शाह को सन्मार्ग प्रदान कर शिक्षा प्रदान की। आचार्य जी ने वहाँ श्रीचन्द्र चिनार की स्थापना की। याकूब खाँ ने आचार्य जी की सेवार्थ बहुत सी जमीन एवं धन आदि प्रदान कर उनकी सेवा की। मुगल बादशाह जहांगीर ने भी श्री श्रीचन्द्र जी का वरद आशीष प्राप्त कर जीवन की धन्यता प्राप्त की।

आचार्य श्री श्रीचन्द जी ने मात्रा शास्त्र की रचना कर गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों को जन सामान्य को सुलभ कराया। आज भी असंख्य साधक उन मात्रारूपी सूत्रों का पारायण कर अपनी जीवन यात्रा को सफल कर रहे हैं। ऐसे महापुरुष की जन्म जयन्ती पर उनके चरणों में कोटि-कोटि नमन एवं वन्दन।

श्री कृष्ण कृपा

18 श्लोकी सवा करोड़ गीता पाठ
गीता जीवन गीत अभियान
GIEO GITA APP पर

भगवान् श्री कृष्ण ने अपने बाल्यकाल में माखन खाया, गैया चराई, बाँसुरी बजाई, रथ चलाया, चक्र चलाया ये सब उन्होंने अनेकानेक बार किया। लेकिन मेरे गोविन्द का एक ही ऐसा कार्य है जो उन्होंने अपने पूरे लीला काल में एक ही बार किया वह है गीता गान -गीत भी कैसा? आनन्द का, भक्ति का, ज्ञान का, प्रेम का, भाव प्रवाह का, जीवन का! पूरा जीवन ही गीत बन जाये जिसे अपनाकर। **जीवन गीत** बन जाये आह्लाद का; जिसे गाकर गूँज उठें सभी दिशायें, नृत्य करने लगे तन-मन-विश्व और पूरा ब्रह्माण्ड; आओ, हम सब भी मिल कर संकल्प लें, जीओ गीता के इस वैश्विक अभियान के साथ इस गीता रूपी प्रभु के गीत को गाने का, अपने जीवन में अपनाने का; नित्यप्रति गीता पाठ करने-करवाने का और बने अपने प्रभु के प्रिय!

मेरा गोविन्द! मेरी ज़िन्दगी

श्री कृष्ण कृपा

आओ मिल यह सन्देश पहुँचाये देश–विदेश में

(लैस्टर गीता उत्सव का प्रेरक भाव)

जीओ गीता का आह्वान् कि भगवत् गीता भारत की आस्था, भारत का गौरव ग्रन्थ है; लेकिन केवल यहाँ तक के लिये नहीं–समूचे विश्व के लिये है गीता ज्ञान;

गीता है जो गीत कृष्ण भगवान् का,
आओ बनायें गीत विश्व कल्याण का।

यह आह्वान् सार्थक होता अनुभव होने लगा, जब जीओ गीता की प्रेरणा एवं सद्भाव से कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड ने अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव अलग–अलग देशों में आयोजित करने का निर्णय लिया। मॉरीशस, इंग्लैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया में अत्यन्त उत्साहपूर्वक गीता महोत्सव के आयोजन सफल भी हुए! उसी से प्रेरणा पाकर जुलाई 2023 इंग्लैंड में ही 'लैस्टर गीता उत्सव' उल्लास, उत्साह की नई प्रेरणा के साथ सम्पन्न हुआ। तीन दिवसीय समूचे आयोजन में श्री कृष्ण कृपा जीओ गीता परिवार के अभिन्न अंग सिंगला परिवार की मुख्य भूमिका रही।

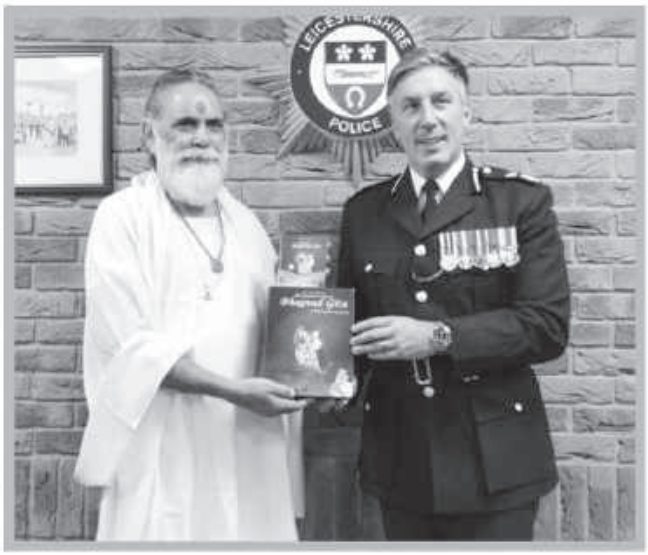

वस्तुतः परिवार के मुख्य श्री रामपाल सिंगला 2019 में हुए मॉरीशस अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में सहभागी थे। महोत्सव के भाव को देखकर उन्होंने तभी मन बनाया कि अपने लैस्टर में भी ऐसा गीता महोत्सव हो! ईश्वरीय इच्छा कुछ और थी। कुछ ही समय पश्चात् रामपाल सिंगला का **गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज** अकस्मात् हृदयगति रूकने से देहावसान हो गया। परिवार के मन में उनकी अधूरी इच्छा पूरी करने का पूरा भाव था। इसी बीच दो वर्ष कोविड प्रभाव का समय आ गया। अनुकूलता मिलते ही 2022 में कनाडा अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के समय सिंगला परिवार का आग्रह फिर सामने आया और 7 से 9 जुलाई 2023 लैस्टर गीता फेस्टिवल के लिये निश्चित हो गई। संयोग से 7 जुलाई रामपाल सिंगला जी का जन्म दिवस भी था।

लैस्टर गीता महोत्सव अनेक रूपों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा! लैस्टर के कोजिंगटन पार्क में विशाल सत्संग और सांस्कृतिक कार्यक्रम पाण्डाल, चारों ओर विभिन्न प्रकार के स्टॉल; दिन भर लोगों की उत्सुक भीड़, पाण्डाल के पास भगवत् गीता प्रदर्शनी, जिसमें गीता जी के 18 अध्यायों की सचित्र सार प्रेरणा, देश–विदेश के महान् विचारकों के प्रेरणादायक विचार, गीता प्रेमियों के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे!

7 और 8 जुलाई दो दिन का गीता सत्संग, भारी उपस्थिति लेकिन विशेष बात यह कि पूर्ण शान्ति और एकाग्रता से गीता जी को सुनने–समझने की लालसा वास्तव में स्पष्ट संकेत कर रही थी कि इस समय भगवद् गीता के प्रति लोगों में कितनी उत्सुकता है! सत्संग के पश्चात् श्रद्धालुओं के साथ

जिज्ञासा समाधान रूप में सीधा संवाद भी आयोजन का प्रभावशाली पक्ष था!

9 जुलाई गीता सद्भावना यात्रा के रूप में शोभा यात्रा का भाव दृश्य नि:सन्देह अद्भुत था। अपार भीड़, 'जय श्री कृष्ण बोलो, जय राधे' की रसमय भावमय संकीर्तन धुन पर नाचते-थिरकते श्रद्धालु, 'हर हर गीता-घर घर गीता' का रह रहकर गूँजता उद्घोष सबको ऐसा अनुभव करवा रहा था, मानो लैस्टर (इंग्लैंड) में लघु भारत की दिव्यता प्रगट हो रही हो!

शोभायात्रा से पूर्व उसी पाण्डाल में गीता यज्ञ का भी विधिवत् आयोजन हुआ। गीता यज्ञ मन्त्र और अष्टादश श्लोकी गीता के उच्चारण से समूचा वातावरण आलोकित था। लन्दन, मानचैस्टर, बर्मिंघम तथा आस पास के कुछ अन्य क्षेत्रों से भी जीओ गीता श्री कृष्ण कृपा परिवार के अनेक भक्त इस सम्पूर्ण आयोजन में सम्मिलित हुए! जीओ गीता के उपाध्यक्ष डा० मार्कण्डे आहूजा, अशोक चावला, महामन्त्री प्रदीप मित्तल, कार्यकारी सदस्य राजेश पजनी, राजेन्द्र चोपड़ा, चिकित्सा विभाग के सक्रिय सदस्य डा० सुदर्शन चुघ, डा० विभा चुघ, डा० अंजु आहूजा आदि विशेषत: भारत से इस लैस्टर गीता उत्सव में साथ रहे। हिन्दु धर्म आचार्य सभा के कर्मठ संयोजक-सचिव पूज्य स्वामी परमात्मानन्द जी की प्रारम्भ से समापन तक पूरे आयोजन में आशीर्वादात्मक उपस्थिति उत्सव की विशिष्ट गरिमा थी।

जीओ गीता के 'हर क्षेत्र में भगवत् गीता' अभियान की दृष्टि से भी यह आयोजन महत्त्वपूर्ण रहा। बर्मिंघम में भारतीय उप-कौंसलेट केन्द्र में वहाँ के कौंसलेट जनरल डा० शशांक विक्रम तथा अन्य अधिकारियों के साथ गीता चर्चा और वहाँ की लाइब्रेरी में ससम्मान गीता जी को विराजित किया गया।

लैस्टर के लार्ड मेयर ..... को वहाँ की कौंसिल के लिये, अन्य मेयर.... को वहाँ के केन्द्रिय कार्यालय हेतु, लैस्टर के पुलिस हैडक्वाटर के लिये पुलिस कमिश्नर श्री रॉब मिक्सन को गीता भेंट की गई। सभी ने गीता के प्रति रूचि और गीता पढ़ने की एवं समझने की जिज्ञासा ने प्रभावित किया।

वहाँ के सांसद नील ओ ब्रायन, पूर्व सांसद और क्षेत्र के प्रमुख समाजसेवी राजनेता कीथ वाज़, मल्टीकल्चर फेथ के प्रमुख रेशम सिंह तथा अनेक सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं के प्रमुखों को अपनी संस्था या केन्द्र में सम्मानपूर्वक विराजित करने हेतु गीता भेंट की गई। इनमें से अधिकतर ने सत्संग मंच पर आकर भी गीता जी के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया!

वहाँ के अनेक बच्चों द्वारा गीता जी के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण और कुछ भजन भाव, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देखकर भी प्रसन्नता हुई।

समूचे लैस्टर गीता उत्सव को विशेष प्रोत्साहन उस समय मिला जब ब्रिटेन के सूचना प्रसारण मन्त्रालय द्वारा वहाँ के प्रधानमन्त्री का आधिकारिक रूप में लिखित शुभ कामना सन्देश पढ़कर सुनाया गया!

कार्यक्रम के मुख्य यजमान रूप में स्व. श्री रामपाल सिंगला जी के दोनों सुपुत्रों जितेश-विनोद सिंगला, मूल प्रेरणा स्वरूप उनकी माता श्रीमति गीता सिंगला और पूरे परिवार की वास्तव में आयोजन की सफलता सार्थकता में अद्भुत भूमिका रही। परिवार की लग्न, समर्पण, निष्ठा और आयोजन की सफलता हेतु कर्मठ उत्साह श्री कृष्ण कृपा का ही प्रभाव था। लैस्टर की अनेक संस्थाओं और शुभेच्छुजनों का सद्भाव भी महत्त्वपूर्ण रहा!

वस्तुत: यह आयोजन जीओ गीता के संकल्प गीत की इन पंक्तियों की साकार अभिव्यक्ति अनुभव हो रहा था;

आओ मिल यह सन्देश पहुँचायें देश विदेश में,
गीता ही है समाधान आज के परिवेश में।
जय गीता माँ, जय भारत माँ गूँजे जयकारा-
यही उद्घोष हमारा, यही संकल्प हमारा।
हम एक बनें, हम नेक बनें, का हो इक नारा-
यही उद्घोष हमारा, यही संकल्प हमारा!

हमारो धन राधा

श्री राधा श्री राधा

-श्री मोहन स्वरूप भाटिया

कृष्ण से भी पहले नाम आता है राधा का और इसीलिए कृष्ण राधा नहीं, राधा-कृष्ण कहा जाता है। राधा को यह महत्ता स्वयं श्री कृष्ण ने प्रदान की है। कोटि-कोटि भक्त श्री कृष्ण की आराधना करते हैं और कृष्ण श्री राधा की आराधना करते हैं। श्री कृष्ण द्वारा आराधना किए जाने के कारण ही वह आराधिका अथवा राधिका कहलाई। उपनिषद् में भी वर्णन है कि श्री कृष्ण जिस की सदा अराधना करते हैं वह हैं श्री राधा। परस्पर एक दूसरे के आराध्य होने के कारण ही राधा तथा कृष्ण अभिन्न हैं और राधा-कृष्ण के युगल रूप की आराधना की जाती है।

राधा का जन्म भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को हुआ था। कहा जाता है कि वह श्री कृष्ण से आयु में साढ़े ग्यारह माह बड़ी हैं। भाद्रपद शुक्ल नवमी को जब गोकुल में नन्दबाबा के यहाँ भगवान् श्री कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था तब कीर्ति किशोरी अपनी साढ़े ग्यारह माह की पुत्री राधा को लेकर वहाँ गई थी। उस समय नवजात कृष्ण पालना झूल रहे थे और गोद में बैठी राधा ने प्रथम बार अपने आराध्य के दर्शन किये थे।

राधा के जन्म-महोत्सव की छटा निहारने के लिए राधाष्टमी के अवसर पर देश के विभिन्न अंचलों से रावल, बरसाना और वृन्दावन में जन-समूह उमड़ पड़ता है। भक्त नर-नारियों के टोले के टोले गाते-बजाते-नाचते-झूमते राधारानी की जय-जयकार करते हैं-

राधारानी की जय-महारानी की जय।
कीरत किशोरी की जय, जय, जय॥

निर्विवाद रूप से राधा की जन्मभूमि रावल है, किन्तु भ्रान्तिवश उनकी जन्मभूमि बरसाना समझ ली जाती है क्योंकि रावल स्थित ननिहाल में जन्म के कुछ समय पश्चात् ही वह अपने पिता वृषभानु जी के निवास स्थल बरसाना आ गईं थीं। रावल मथुरा से 12 किमी. दूर यमुना के उस पार एक छोटा सा गाँव है और यहाँ लाडिली जी का एक छोटा सा मन्दिर है। रावल की अपेक्षा बरसाना में लाडिली जी का विशाल मन्दिर है और वृहत्सानु पर्वत के कारण अत्यन्त रमणीक स्थान है। इस कारण यह भक्तजनों तथा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना और अधिकांश बाल्यकाल यहाँ बीतने के कारण ही उसे राधा की जन्मभूमि कहा जाने लगा।

राधा जी के पिता का नाम वृषभानु है। जन्म के समय वह रावल में अपने नाना सुरभानु के यहाँ थीं। पौराणिक ग्रन्थों और अष्टछाप के कवियों आदि के वर्णनों से निर्विवाद रूप से रावल का राधा की जन्मभूमि के रूप में चित्रण किया गया है। महाकवि सूरदास ने गाया है- 'आज रावल में बजत बधाई' और अष्टछाप के ही एक अन्य कवि परमानन्द दास के अनुसार-

आज रावल में जय-जयकार,
प्रगट भई वृषभान गोप के श्री राधा अवतार।

रावल गाँव में श्री राधा जी के जन्मस्थल पर कभी एक भव्य मन्दिर बना हुआ था, किन्तु 17 वीं शताब्दी में यमुना में आई भीषण बाढ़ ने इस मन्दिर को काफी क्षति पहुँचाई थी। उस समय

मन्दिर में प्रतिष्ठित राधा जी की भव्य प्रतिमा को बरसाना के मन्दिर में विराजमान कर दिया गया था। बाद में खुशाल सेठ नामक व्यक्ति ने यहाँ मन्दिर का निर्माण कराया था। सन् 1924 की बाढ़ ने इस मन्दिर को क्षतिग्रस्त कर डाला और तब वृन्दावन के भक्त सेठ हरगूलाल ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था।

अब से लगभग 122 वर्ष पूर्व मथुरा के तत्कालीन अंग्रेज कलैक्टर एस.एस.ग्राउस ने अपने ग्रन्थ 'मथुरा-ए डिस्ट्रिक्ट मैमोयर' में लिखा है कि उस समय रावल स्थित मन्दिर के पुजारी छोटे लाल के पास सन् 1739 की मुहम्मदशाह के समय की एक सनद है जिसमें मुहम्मदशाह के वजीर करमउद्दीन खान ने यह आदेश दिया था कि मन्दिर की व्यवस्था के लिए महावन तहसील के खजाने से एक रूपया प्रतिदिन दिया जाये।

राधाष्टमी के दिन रावल के राधारानी मन्दिर में राधा जी की प्रतिमा का दूध, दही, घी, शहद आदि से वैदिक मन्त्रों के मध्य अभिषेक किया जाता है और बधाईयाँ गाई जाती हैं। राधा की बाल-लीला स्थली बरसाना में राधाष्टमी के दिन बृहत्सानु पर्वत के उच्च शिखर पर स्थित श्री राधा जी के विशाल मन्दिर में दूध, दही, घृत, शहद, शक्कर आदि के अतिरिक्त 52 कुओं के जल, 52 वृक्षों के पत्तों, ब्रज-रज आदि से अभिषेक की परम्परा है। श्रद्धालु भक्त प्रियाकुण्ड में स्नान कर गहवरवन की परिक्रमा करते हैं।

वृन्दावन में राधाष्टमी का उत्सव सर्वाधिक उल्लास, श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। राधावल्लभीय सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध मन्दिर श्री राधावल्लभ में तो राधाष्टमी के चार दिन पूर्व ही जन्मोत्सव समारोह प्रारम्भ हो जाते हैं। राधाष्टमी की पूर्व रात्रि का ढांढा-ढांढिन का नृत्य और पदों का गायन किया जाता है। इससे अगले दिन प्रातः 11 बजे दधिकांदों का उत्सव होता गोस्वामी गण हल्दी मिश्रित दही भक्तजनों पर छिड़कते हैं और फल, बर्तन, वस्त्र, आभूषण, द्रव्य आदि सामग्री जुटाई जाती है।

वृन्दावन के विश्व प्रसिद्ध श्री बांकेबिहारी मन्दिर में राधाष्टमी के दिन विशेष रूप से दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के लाखों नर-नारी दर्शनों के लिए आते हैं। महान् सन्त और संगीत सम्राट स्वामी हरिदास राधा जी की अनन्य सखी ललिता के अवतार माने जाते हैं और राधाष्टमी की भी जन्मतिथि है, इसलिए इस पर स्वामी हरिदास-जयन्ती के उपलक्ष्य में अनेक समारोह आयोजित किये जाते हैं। वृन्दावन में यमुना तट स्थित टटिया स्थान के श्री मोहिनी बिहारी जी मन्दिर के दर्शनों के लिए विशेष रूप से मथुरा के चतुर्वेदी बड़ी संख्या में आते हैं। राधाष्टमी पर सम्पूर्ण ब्रज राधामय हो गया उठता है-

हमारौ धन राधा, श्री राधा, श्री राधा,
परम धन राधा, राधा, राधा, राधा राधा।

ब्रज क्षेत्र में राधा की इतनी अधिक महत्ता है कि चहुं ओर 'राधे-राधे' की ध्वनि गूंजती है-

वृन्दावन के विरज कौ, मरम न जाने कोय,
डाल-डाल और पात-पात पै श्री राधे राधे होय।

गोस्वामी तुलसीदास जी जब ब्रज में आये तो उन्हें जब सर्वत्र 'राधे-राधे' के स्वर सुनाई दिये तो वह कह उठे कि यहाँ आक, ढाक, कैर सभी राधा-राधा रटते हैं, क्या इस भूमि को श्री राम और सीता से कोई शत्रुता है-

राधा-राधा रटत हैं, आक, ढाक और कैर।
तुलसी या व्रज में कहा, सिया राम सों बैर॥

राधा वन्दनीय हैं, अभिनन्दनीय हैं एवं पूज्यनीय हैं राधा की पूजा अर्चना से, श्री कृष्ण की प्राप्ति सहज हो जाती है।

जिज्ञासा-समाधान

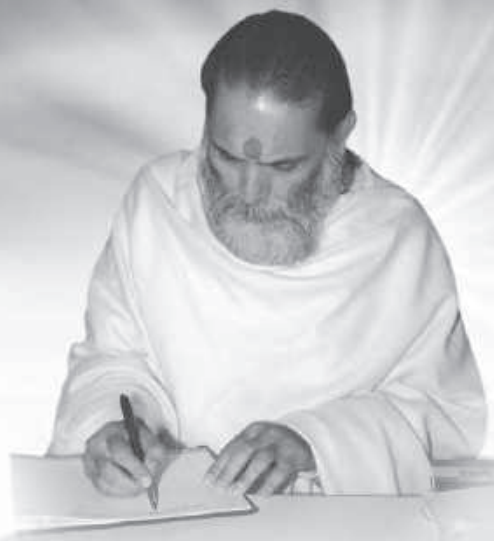

म. मं. गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

(इंग्लैंड गीता सत्संग प्रवास एवं लैस्टर गीता महोत्सव में सामने आये प्रश्न-जिज्ञासायें और उनका पूज्य महाराज श्री द्वारा समाधान)

जिज्ञासा : *गीता में ज्ञान का स्वरूप क्या है तथा ज्ञान और तत्त्वज्ञान में अन्तर क्यों ?*

समाधान : वास्तविकता को समझ लेना ही वस्तुत: गीता में ज्ञान का स्वरूप है! शरीर की वास्तविकता क्या है तथा शरीर को संचालित करने वाली चेतना (आत्मा) क्या है। शरीरों की वास्तविकता न समझ कर प्राय: शरीर की बाह्य सुन्दरता तक ही स्थितियाँ सिमटी रहती हैं। गीता का ज्ञान यह चेताता और समझाता है कि शरीर तो परिवर्तनशील और मरणधर्मा है- शरीर का सौन्दर्य भी भीतर की चेतनाशक्ति आत्मा के कारण से है! आत्मा चेतन है, शरीर जड़। इसी प्रकार प्रकृति-पुरुष अथवा सृष्टि और परमात्मा की स्थिति! सही जानकारी न होने के कारण ही जीव अज्ञान में उलझा रहता है, जिस कारण से असत् को सत्, जड़ को ही चेतन मान कर जीवन के लक्ष्य से विमुख रहता है।

गीता का ज्ञान जीव को लक्ष्योन्मुख करता है! इसीलिये भगवान् कृष्ण ने गीता के 13वें अध्याय में क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, प्रकृति-पुरुष का वर्णन कर दिया;

अध्यात्मज्ञाननित्यत्त्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तंमज्ञानं यदतोऽन्यथा॥

-13/11

जहाँ तक ज्ञान और तत्त्वज्ञान के भेद की बात है, समझ लें कि ज्ञान जानकारी है जबकि तत्त्व ज्ञान उसका व्यावहारिक अनुभव! साइंस के विद्यार्थी जानते हैं कि कक्षा में सैद्धान्तिक जानकारी मिलती है और प्रयोगशाला में उसका व्यावहारिक प्रयोग। ध्यान (Meditation) में बैठने का अभ्यास बनायें। अपनी बिखरी चित्त वृत्तियों को धीरे-धीरे अन्तरात्मा (ईश्वरीय चेतना; में जोड़ें-वही अनुभव होगा ज्ञान का तात्त्विक स्वरूप-यही तत्त्व ज्ञान है।

जिज्ञासा : *हिन्दु धर्म और इसका मुख्य ग्रन्थ भगवत् गीता त्याग की बात करता है; तो धन कमाना, कमा कर कुछ बनाना कितना तर्कसंगत है। गीता भौतिक समृद्धि में बाधक है क्या ?*

समाधान : यह निश्चित है कि हिन्दु धर्म त्याग-तप और संयम की प्रेरणा है। भगवत् गीता में तो अनेक बार त्याग की बात आई है। 12वें अध्याय में त्याग से शीघ्र शान्ति प्राप्ति का भाव आया-**त्यागात् शान्तिरनन्तरम्** गीता जी में यह भी स्पष्ट है कि कर्म

त्याग की अपेक्षा कर्म करना ही श्रेयस्कर है। वस्तुत: भगवत् गीता में कर्म का त्याग नहीं, त्याग भाव से कर्म की प्रेरणा है। गीता को जो त्याग मान्य है, वह है अहंकार और आसक्ति का। न धन कमाने में बाधक हैं गीता प्रेरणायें और न लौकिक सुख समृद्धि में। जीओ गीता का तो इसीलिये सीधा स्पष्ट सबके लिये आह्वान् है- गीता पढ़ो, हर क्षेत्र में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ो! सच्चाई यह है कि गीता पढ़ने से अपने क्षेत्र में कर्म को आप और अधिक निष्ठापूर्वक कर पायेंगे, जिससे अच्छे परिणाम स्वत: सामने आयेंगे!

जिज्ञासा : *गीता उपदेश अर्जुन को ही क्यों दिया गया? यदि कहीं भगवान् कृष्ण यह उपदेश दुर्योधन को दे देते, तो क्या महाभारत युद्ध से बचा नहीं जा सकता था?*

समाधान : यह प्रश्न बहुत से लोगों के मन-मस्तिष्क में आता है; आवश्यकता विचार की है। अर्जुन को भी भगवान् कृष्ण ने तब तक उपदेश नहीं दिया, जब तक अर्जुन ने विनम्रतापूर्वक उन से यह निवेदन नहीं किया कि मेरी बुद्धि भ्रमित है, विचलित है; सही निर्णय नहीं कर पा रही। आपका शिष्य बन आपकी शरण में हूँ, मेरा उचित शिक्षा से मार्गदर्शन करो (गीता 2/7) गीता जी के प्रथम अध्याय में अधिकांशत: अर्जुन उवाच है या फिर अर्जुन की ही मनोदशा को स्पष्ट करता संजय उवाच। कहीं भी श्री भगवानुवाच नहीं। भगवान् मौन भाव से अर्जुन को सुनते रहे। उपदेश का भाव तो अर्जुन की जिज्ञासा के साथ ही प्रारम्भ हुए!

दूसरी ओर दुर्योधन को देखें। महाभारत युद्ध से पूर्व भगवान् स्वयं हस्तिनापुर दरबार में दुर्योधन को समझाने पहुँचे। युद्ध न हो-हर सम्भव प्रयास किया गया। आधा-आधा राज्य दोनों बाँट लें नहीं तो पाँच गाँव ही पाण्डवों को देने की बात कही; दुर्योधन तब भी नहीं माना और स्पष्ट कह दिया बिना युद्ध के पाण्डवों को सुई की नोक जितनी जमीन देने को भी तैयार नहीं। सोचो-ऐसी स्थिति में गीता उपदेश देने अथवा और कुछ भी समझाने का औचित्य ही कहाँ रह जाता है!

जिज्ञासा : *भगवान् स्वयं तो आनन्दमय हैं, तो उनके बनाये जीव दु:खी क्यों?*

समाधान : भगवान् का स्वरूप नि:सन्देह 'रसो वै स:' अर्थात् रस स्वरूप-आनन्द स्वरूप है। जीव परमात्मा का सनातन अंश है, इस नाते से होना ऐसा ही चाहिये था कि आनन्दपूर्वक जीवन यात्रा में आगे बढ़ें; लेकिन व्यवहार पक्ष बिल्कुल अलग दिखता है। सोचो, पिता धनाढ्य हो, सब सुख सुविधायें उनके पास हों; लेकिन पुत्र कंगाल बन इधर-उधर से धन या सुख साधन की इच्छा कर रहा हो- ऐसा क्यों? केवल इसलिये कि पुत्र पिता का बनकर नहीं रह पाया होगा, मनमाना आचरण कर रहा होगा, जिससे या वह पिता से विमुख अलग रह रहा होगा अथवा उसके मनमाने विपरीत आचरण से पिता ने अलग अथवा बेदखल कर दिया होगा।

जीव परमात्मा की बनाई सृष्टि में उनका बन कर रहे, उनके बनाये विधान के अनुसार रहे, उनकी इच्छा में अपनी इच्छा मिलाकर रहे-तब निश्चित और नि:सन्देह परमात्मा की आनन्दमय विरासत पर स्वाभाविक उस का अधिकार सिद्ध हो जायेगा; लेकिन जब ऐसा न करके जीव अपनी ही बनाई 'जीव सृष्टि' में रहने लगता है अर्थात् अपने अहंकार, अपनी इच्छाओं-कामनाओं और उससे प्राप्त प्राणी पदार्थों की आसक्ति अथवा जहाँ उसकी अनुकूलता नहीं, वहाँ से ईर्ष्या-द्वेष, क्रोध-आवेश तक की अपनी दुनियाँ में सिमट जाता है, वहीं से दु:ख, शोक, चिन्ता आदि का जन्म होता है। सार की बात-संसार में रहें, लेकिन संसार के बन कर नहीं, उस प्रभु के बनकर रहें, जिसके हम हैं!

जय श्री कृष्ण

''लैस्टर गीता महोत्सव''

भारत की पवित्र धरा से लगभग 7000 किमी. दूर, इंग्लैंड के लैस्टर शहर में गीता महोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास और धूम-धाम से मनाया गया। जिन गोरों ने लगभग साढ़े तीन सौ साल राज किया और अपने विचार से भारत पर हकूमत की उन्हीं की धरती पर भारत के विचार की जीत, भारत के विचार का प्रभात, भारत के विचार का चिन्तन और मनन देखते ही बनता था। इसे सम्भव किसी और ने नहीं अपितु राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्र अराधना से ओत-प्रोत गीता के प्रचार-प्रसार के प्रणेता गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी ने किया। ज्ञातव्य है कि गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी द्वारा संचालित जीओ गीता और श्री कृष्ण कृपा संस्थायें निरन्तर गीता मनीषी जी की प्रेरणा से 'जन-जन गीता', 'घर-घर गीता' अभियान में लगे हैं। इसी मंतव्य को लेकर लैस्टर शहर के सिंगला बन्धुओं ने अपने पिता स्वर्गीय श्री रामपाल सिंगला की स्मृति में अपनी माता श्रीमती गीता सिंगला के साथ वो कर दिखाया जो एक इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बन गया।

शंखनाद, मृदंगनाद और ढोल नगाडों के संग कृष्ण कृपा और गुरुदेव कृपा के भजन गायन के मध्य श्वेताम्बर में गीता मनीषी जी का व्यास पीठ को नमन और गीता माँ को नमन के साथ व्यासपीठ पर विराजमान होना ऐसे लगा जैसे अज्ञान के अन्धकार में ज्ञान का प्रकाशपुंज विराजमान हो गया हो। गुजरात की धरा से पधारे प.पू. स्वामी परमात्मानन्द जी के नेतृत्व में गीता भवन लैस्टर के महेश पराशर, लैस्टर की डिप्टी मेयर लार्ड जार्ज कोल, मल्टी फेथ ऐसोसिएशन के मुखिया रेशम सिंह सन्धु, शिवालय मन्दिर के मधु शास्त्री, दीप्ति बेन मिस्त्री, जीओ गीता के उपाध्यध अशोक चावला, महामन्त्री प्रदीप मित्तल, डा० अंजू अहूजा, डा० सुदर्शन चुघ द्वारा दीप प्रज्जवलित कर सिंगला परिवार संग 'गीता जी' को पुष्पांजलि अर्पित की गई। डा० मारकंडे अहूजा ने महाराज जी (जिनको परिचय की कोई आवश्यकता नहीं) के कार्यों को सभी के समक्ष रखा और उन द्वारा निर्माणाधीन 'गीता ज्ञान

संस्थानम्, कुरुक्षेत्र' की विशेषताओं का उल्लेख किया। उन्होंने यह भी कहा कि गीता एक पुस्तक नहीं जीवन्त रचना है और सभी आयु और सभी वर्गों के लिये प्रेरणास्त्रोत है एवं जीवन जीने का रास्ता है। प.पू. स्वामी परमात्मानन्द जी ने जीवन में गीता के बताये मार्ग पर चलने की अपील की तथा कहा कि गीता कर्म, भक्ति, ज्ञान की त्रिवेणी है और यह त्रिवेणी जब गीता मनीषी जी के मुख से बहेगी तो अमृत की धारा के समान हम सब का कल्याण करेगी। उन्होंने गीता मनीषी के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और लैस्टर की भूमि पर एकत्रित सभी जनों एवं विशेषकर सिंगला परिवार को शुभाशीर्वाद दिया और कहा कि ऐसे सार्थक आयोजन निरन्तर आयोजित होते रहने चाहिये। गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज ने लोक कल्याण के मन्त्रोचारण से अपने आर्शीवचन की शुरूआत की और कहा कि गीता केवल मात्र उपदेश नहीं है परन्तु उपचार है हम सब के लिये जो दिन-प्रतिदिन अपने को अर्जुन की स्थिति में कष्ट में, संताप में, दुविधा में यानी विषाद में पाते हैं। गीता का सन्देश केवल अर्जुन के लिये नहीं अपितु हम सब को विषाद से आह्लाद, अज्ञान से ज्ञान, अन्धकार से प्रकाश, असत्य से सत्य और अधर्म से धर्म के सन्मार्ग पर ले जाने के लिये है। उन्होंने सत्संग के महत्त्व पर बल देते हुए कहा कि अर्जुन ने कृष्ण की मंत्रणा ली जबकि दुर्योधन ने शकुनि की- नतीजा हम सबके सामने है। केकेयी द्वारा मंथरा की मंत्रणा और रावण के द्वारा विभीषण की सलाह न मानना इस बात के अन्य उदाहरण हैं। उन्होंने हजारों की संख्या में उपस्थित जनों को मद, मोह, मत्सर, अहंकार, ईष्या, राग, द्वेष से ऊपर आकर गीता में बताये दैवीय गुणों जैसे प्रेम, भाईचारा, शान्ति, विश्व बन्धुत्व, दानशीलता, क्षमाशीलता, संवेदनशीलता और करुणा को अपनाने और जगाने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने यह भी कहा कि सुविधायें बढ़ रही हैं परन्तु क्षमतायें घट रही हैं। गीता क्षमताओं को बढ़ाने का मार्ग है प्रत्येक व्यक्ति में सुप्त क्षमतायें एवं शक्तियाँ हैं, गीता इन्हीं शक्तियों को जगाकर एक साधारण मानव को असाधारण मानव बनाने का कार्य करती है। प्रथम दिवस (7 जुलाई 2023) गीता जी की आरती एवं भोजन प्रसाद के वितरण के साथ सम्पन्न हुआ। क्रासिंगटन पार्क, लैस्टर का नजारा-कहीं खुशी से झूलों पर खेलते बच्चे, कहीं खरीददारी करते युवक-युवतियां, कहीं आशीर्वाद लेता समूहजन, कहीं गीता की प्रेरणाओं का आनन्द लेते भक्तजन, कहीं 'गुरुदेव कृपा' के भजनों की मंत्रमुग्ध धुन पर थिरकते बुर्जुग- कुल मिलाकर अद्भुत, अद्वितीय एवं अनुपम नजारा। धन्य थे वे सब जो इस आनन्द के साक्षी थे।

द्वितीय दिवस (8 जुलाई 2023) व्यासपीठ को नमन, गीता जी को नमन, जार्ज कोल, नील ओ ब्रायन (सांसद), रूपर्ट मैथूयस (लैस्टर क्राइम पुलिस मुखिया), भूपेन्द्र दबे (काउंसलर) तथा अन्य गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्जवलन से आरम्भ हुआ। कार्यक्रम के संचालक जीतेश सिंगला ने प्रभावित एवं प्रभु भावित होकर कहा- **'महाराज जी घड़ी में हो चाहे कितने भी बजे, लैस्टर दौड़ा चला आयेगा सब कुछ तजे।''** डा० मारकंडे अहूजा ने कहा कि गीता इज डोज़ टू हैप्पीनस। हमारे शरीर में आनन्द पाने के चार हारमोन हैं- Dopamine, Oxytocin, Serotonin, Endorphin और गीता पर रिसर्च बताती है कि गीता पठन और गीता के प्रेरणाओं को जीवन में अपनाने से यह चारों हारमोन का डोज़ पूर्ण रूप से मिल जाता है। गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी ने इसी विचार को आगे बढ़ाते हुये कहा कि गीता का सन्देश ही

यही है- खुले रहो, खिले रहो। उन्होंने कहा कि आज की अन्धाधुन्ध भौतिकवादी दौड़ ने व्यक्ति को अशान्त बनाया है। जहाँ बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल में अनेक सुविधा की वस्तुयें उपलब्ध हैं वहीं वहाँ 'शान्ति' का कोई काउन्टर नहीं है। काश! विज्ञान शान्ति देने वाला कोई उपकरण उपलब्ध करवा पाता। काश! शान्ति भी पैसों से खरीदी जा सकती! गीता शान्ति का शास्त्र है, गीता प्रेम का शास्त्र है, गीता भक्ति का शास्त्र है, गीता प्रभु मिलन का शास्त्र है, गीता मोक्ष का शास्त्र है और गीता सब ग्रन्थों की नींव है। उपरोक्त बातें उन्होंने स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द के जीवन को उद्‌हत् की। तालियों की गड़गड़ाहट और जय गुरुदेव के उद्‌घोष के बीच स्वामी जी ने कुछ जिज्ञासुओं के प्रश्नोत्तर और गीता जी की आरती के साथ सत्र समाप्त किया। स्वामी जी के उद्‌बोधन की गरिमाभरी सादगी, जल जैसी पारदर्शिता, अग्नि जैसी तेजस्विता, आकाश जैसी निर्लेपता, पृथ्वी जैसी धैर्यता, वायु जैसी वाहिता, बादलों जैसी गर्जना और कौंधती बिजली सी स्पष्टता, प्राणिमात्र के लिये संवेदनशीलता देखते ही बनती थी। दूसरे दिन की शुरूआत से पहले सभी चिन्तित थे क्योंकि मौसम विभाग के अनुमानुसार वर्षा होने की सम्भावना शत्-प्रतिशत थी। जब स्वामी जी के समक्ष इस चिन्ता को रखा गया तो उन्होंने ममतामयी दृष्टि से आकाश की ओर निहारा और हल्की सी मुस्कान दी। बस फिर क्या था- जैसे भगवान् कृष्ण की अंगुली ने गोवर्धन उठाकर वर्षा से रक्षा की थी वैसे ही महाराज श्री के दृष्टिपात और श्री कृष्ण कृपा ने काले बादलों के जल को धरती पर गिरने से रोके रखा। जैसे ही अन्तिम व्यक्ति ने प्रसाद ग्रहण किया वैसे ही बादलों का जल हम सबको जलमग्न कर गया। अद्‌भुत लीला अनुपम नजारा और अद्वितीय कार्यक्रम- इसके अतिरिक्त लेखनी शायद कुछ लिख न पाये। तृतीय दिवस (9 जुलाई 2023) गीता हवन यज्ञ, महाराज जी का उद्‌बोधन और फिर एक हजूम गीता जी को मस्तक पर धारण किये, पीताम्बरी पटके पहने, 'हर-हर गीता, घर-घर गीता' के उद्‌घोष, जय राधे-जय राधे - जय श्री कृष्ण - कृष्णा-कृष्णा-जय राधे की धुन के साथ निकल पड़ा लैस्टर के बाजारों और गलियों को वृन्दावन की गलियां बनाने। ऐसा लगता था इंग्लैंड का काशी कहे जाने वाला शहर लैस्टर पूर्णत: वृन्दावनमयी, गोकुलमयी, द्वारकामयी, राधाकृष्णमयी, गीतामयी और गुरुदेवमयी हो गया हो। यदि 9/11 को आज की दुनिया आतंक, डर, नफरत और बर्बादी के नाम से जानती है तो 9/7 इंग्लैंड में प्रेम, करुणा, ममता, कर्मशीलता, ज्ञान और भक्ति का सन्देश देती गीता के नाम से जाना जायेगा।

इस शोभा यात्रा में गीता जी को मस्तक पर धारण करके चलने वाले गणमान्य व्यक्तियों में पूर्व सांसद, कीथ वाच़, राम मन्दिर साऊथ हॉल लन्दन से अनेक साथियों के साथ श्री उमेश शर्मा, श्री अरुण ठाकुर, इन्दु सेठ जी के साथ मनचेस्टर से अनेक जीओ गीता के सदस्य, भारत से महाराज जी के साथ जीओ गीता के अनेक अधिकारीगण सम्मलित हुये।

लैस्टर वासियों ने महाराज जी से यह कह कर अपील की कि वह लैस्टर गीता महोत्सव को वार्षिक उत्सव बनाने की अनुमति प्रदान करें। जीतेश एवं विनोद सिंगला ने बड़े मार्मिक शब्द कहे- **महाराज जी फीकी पड़ जायेगी घुंघरूओं की झंकार, जब लैस्टर पुकारेगा आपको बार-बार!**

डा० मारकंडे आहूजा,
उपाध्यक्ष, जीओ गीता

ध्यान कर ! बस ध्यान कर

—गीता मनीषी
स्वामी श्रीज्ञानानन्द जी महाराज

मानव के जीवन का है लक्ष्य एक ही प्रभु की प्राप्ति।
रहने को रचे-पचे जग में ही मिली नहीं जिन्दगी॥
कर जीवन यापन इस तरह पा जिससे सके ईश्वर।
साधन उन्हें पाने का उत्तम, ध्यान कर! बस ध्यान कर॥

संसार है अस्थिर अनित्य नाशवान् सुख रहित।
जो स्वयं है चक्कर में कैसे शान्त कर पाये वो चित्त॥
सुख-दुःख के हिंडोले में ही क्यों झूलता रहता है नर।
सुख शाश्वत चाहिए तो नियमित, ध्यान कर! बस ध्यान कर॥

जब भी किसी वस्तु से मिलता शान्ति सुख आराम है।
वास्तव में सुख वह एकाग्रता का ही परिणाम है॥
कब तक रहे एकाग्र मन आसक्त जो संसार पर।
स्थायी एकाग्रता के लिये, ध्यान कर! बस ध्यान कर॥

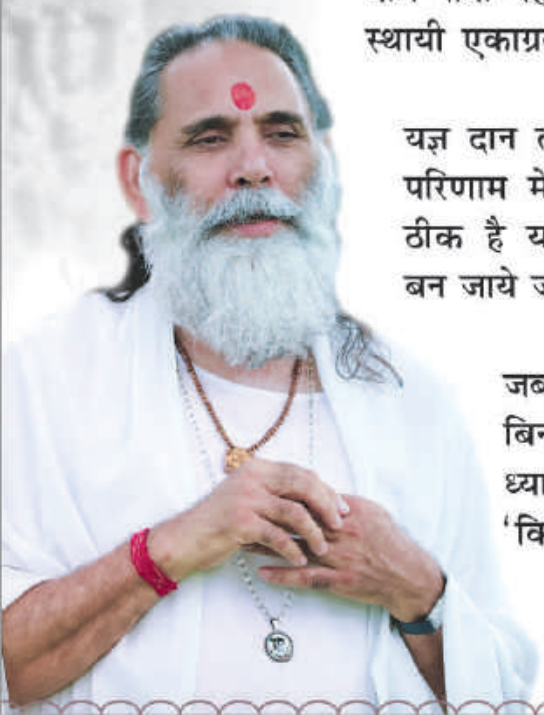

यज्ञ दान तप अध्ययन किया बहुत कुछ पर सोच तो।
परिणाम में इनके क्या अन्तःकरण गया है शुद्ध हो॥
ठीक है यह सब एकाग्र ध्यान में हुआ मन अगर।
बन जाये जब एकाग्रता तो, ध्यान कर! बस ध्यान कर॥

जब जिस समय भी भाव मन में ध्यान का हो जागृत।
बिना विलम्ब सब काम छोड़ ध्यान में हो जा स्थित।।
ध्यान साधन ऐसा है कल्याण करता जो शीघ्र।
'किंकर' लगा धुन ध्यान की तू, ध्यान कर! बस ध्यान कर।।

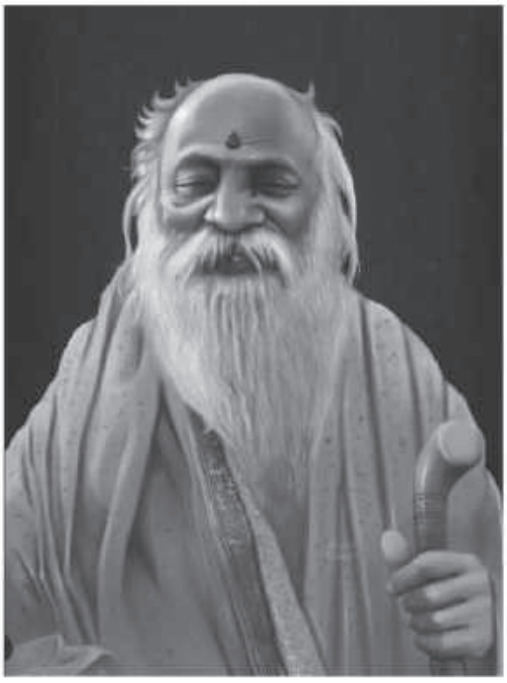

मेरे नाथ आपकी महिमा अपरम्पार है

-स्वामी शरणानन्द जी (मानव सेवा संघ (करनाल)

साधुशाही रहनी थी। गाँव के किनारे शाम के समय किसी स्थान पर ठहरना था। विवेक-विरोधी वातावरण देख श्री स्वामी जी महाराज वहाँ से रात्रि में चल दिये। सारी रात चलते रहे। शरीर बहुत थक गया था। नौका से पार होते समय मल्लाह ने भजन गाया, जिसका आशय यह था कि **श्याम का दास हो गया बेदाम का।** भजन सुनकर स्वामी जी के हृदय में प्रीति का भाव उमड़ पड़ा। उसी मस्ती में नदी के पार उतर कर अकेले ही चल पड़े। नदी का कछार कटीला था, जमीन दलदल थी, किसी से रास्ता पूछने का उनका नियम नहीं था। स्वयं रास्ता बताने वाला राही वहाँ नहीं था। बिना देखे, बिना जाने, थका-माँदा शरीर और विरह से उमड़ता हुआ हृदय; श्रीस्वामी जी महाराज जिधर ही कदम रखें, पैर काँटों और दलदल में फँस जाये- शरणागत की रक्षा में उपस्थिति होने का अवसर शरण्य को मिला। एक व्यक्ति आया और कहने लगा कि 'बाबा! अमुक गाँव को जा रहे क्या? मुझे भी वहाँ जाना है। चलो मेरे साथ और देखो भाई, मैं बहुत थका हुआ हूँ, धीरे-धीरे चलूँगा।' ऐसा कहकर वे श्री स्वामी जी को काँटा-कुशा से बचाकर ठीक से रास्ते से निकालकर लिवा गये। जब गाँव नजदीक आ गया और पक्की सड़क आ गयी तो यह कह कर गायब हो गये कि मुझे यहाँ से दूसरी तरफ जाना है। श्री स्वामी जी महाराज को उनका आत्मीय व्यवहार एवं कुसमय में उनका सहारा प्रेम-भाव को अति तीव्र करने वाला मालूम हुआ। विरह आँखों से छलकने लगा। हृदय में प्रतिध्वनि होने लगी- हे मेरे प्यारे, कितना ध्यान रखते हो! बिना बुलाये आ गये! जिधर मुझे जाना था उधर के ही राही बने! और प्यारे, जैसी मेरी थकी हुई दशा थी जिसमें मैं खुद ही जल्दी-जल्दी नहीं चल सकता था, वैसे ही थकी हुई दशा अपनी बनाकर धीरे-धीरे मुझे चलाकर गाँव तक पहुँचा दिया। तुम्हारी महिमा अपरम्पार है!

ज्ञान साधना

-गीता मनीषी
स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

गतांक से आगे -

सजग रहिए प्रत्येक स्थिति से

गम्भीरता से सोचिए- आपको राग-द्वेष के इसी क्रम में उलझे रहना अभीष्ट है अथवा ध्यान में प्रगति करके अपना हित-साधन करना और जीवन को आनन्दमयी बनाना। यदि संसार से आपका अभीष्ट सिद्ध हो रहा है, सभी प्रकार से आप स्वयं को शान्त, आनन्दित एवं निश्चिन्त पाते हैं तब तो ठीक है संसारासक्त हो कदाचित यह तो हो भी जाये जाए लेकिन संसार में आसक्त रहकर कोई यह कहे कि मैं सर्वदा आनन्दमग्न रहूँ, यह कदापि-कदापि सम्भव नहीं। वैसे तो किसी समय यह अनुभव नहीं हो सकता कि अब मैं सर्वतन्त्र स्वतन्त्र होकर पूर्णतया शान्त एवं सन्तुष्ट हूँ; फिर भी यदि ऐसा स्वीकार कर लिया जाए तो संसार से उधार ली गई यह सुख-शान्ति कब तक रहेगी सजग रहिए- किसी भी क्षण परिस्थितियाँ करवट लेकर आपकी जीवन नैय्या को दु:खों के गहन सागर में डूबो सकती हैं। सतत् आनन्द की स्थिति में रहने के लिए अपने को उस अवस्था में ले जाना होगा जो पूर्णत: दु:खातीत है और यह सम्भव है- ध्यान की गहराईयों में अपने को ले जाकर ही।

किस ढंग से ध्यान करें

आइए, अब विचार-विमर्श करें- ध्यान प्रक्रिया पर। ध्यान की विधि क्या है, ध्यान में कैसे बैठना चाहिए, केवल बैठना ही नहीं बैठकर मन को कैसे केन्द्रित करना चाहिए अर्थात किस ढंग से ध्यान करें जिससे तन के साथ-साथ मन भी बैठ जाए। यह तो ध्यान नहीं हुआ कि तन से बैठ गए, तन को सीधा स्थिर कर लिया लेकिन मन अत्र-तत्र चक्कर लगाता रहा। जहाँ तन है, वहीं मन होना चाहिए। इसी का नाम है-ध्यान। किसी आसन विशेष में बैठ जाने मात्र को ही ध्यान नहीं कहते, यद्यपि स्थिर आसन ध्यान का एक आवश्यक अंग अवश्य है। ध्यान में अपने लिए कोई सुविधाजनक आसन होना चाहिए, जिसमें बैठने से रक्त संचार ठीक ढ़ग से चलता रहता रहे ताकि बैठते समय शीघ्र ही पीड़ा का अनुभव न हो, जिसमे अधिकाधिक समय सुखपूर्वक तथा सुगमतापूर्वक बैठा जा सके। यदि किसी अन्य आसन में बैठने से कोई कठिनाई होती हो तो सुखासन में ही बैठ जाएं। यह सबसे सरल और सुविधाप्रद आसन है।

क्रमश:

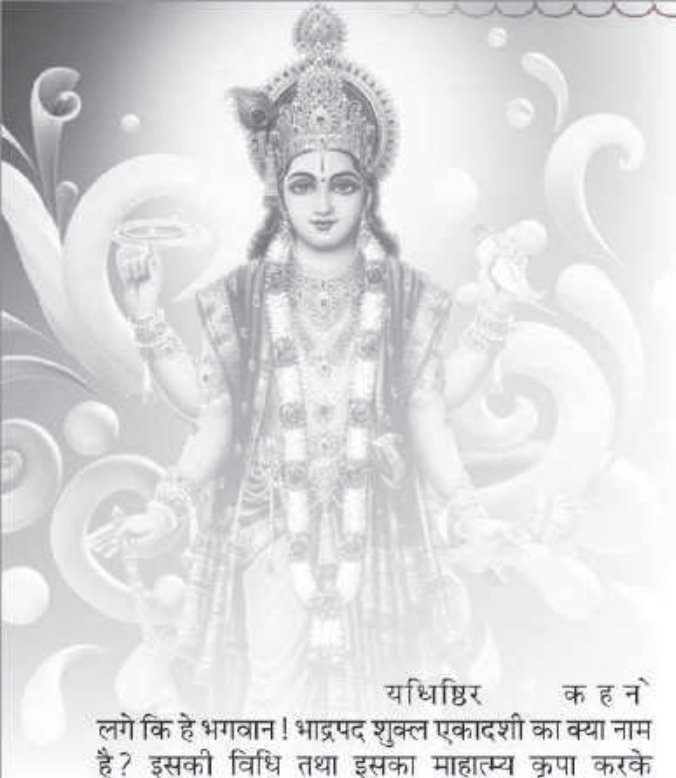

पद्मा एकादशी व्रत कथा

25 सितम्बर, 2023

युधिष्ठिर कहने लगे कि हे भगवान! भाद्रपद शुक्ल एकादशी का क्या नाम है? इसकी विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिये। तब भगवान् श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस पुण्य, स्वर्ग और मोक्ष को देने वाली तथा सब पापों का नाश करने वाली एकादशी का माहात्म्य मैं तुमसे कहता हूँ तुम ध्यानपूर्वक सुना। यह पद्मा, परिवर्तिनी एकादशी, जयन्ती एकादशी भी कहलाती है। इसका यज्ञ करने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। पापियों के पाप नाश करने के लिए इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं। जो मनुष्य इस एकादशी के दिन मेरी पूजा करता है, उससे तीनों लोक पूज्य होते हैं। अतः मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्य इस व्रत को अवश्य करें। जो कमलनयन भगवान् का कमल से पूजन करते हैं वे अवश्य भगवान् के समीप जाते हैं। जिसने भाद्रपद शुक्ल एकादशी को व्रत और पूजन किया, उसने ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित तीनों लोकों का पूजन अवश्य करना चाहिए। इस दिन भगवान् करवट लेते हैं, इसलिए इसको परिवर्तिनी एकादशी भी कहते हैं।

भगवान् के वचन सुनकर युधिष्ठिर बोले कि भगवान् मुझे अति सन्देह हो रहा है कि आप किस प्रकार सोते और करवट लेते हैं तथा किस तरह राजा बलि को बाँधा और वामन रूप रखकर क्या-क्या लीलाएँ की हैं। चातुर्मास के व्रत की क्या विधि है तथा आपके शयन करने पर मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है। सो आप मुझसे विस्तार से बताइए। श्रीकृष्ण कहने लगे कि हे राजन्! अब आप सब पापों को नष्ट करने वाली कथा का श्रवण करें।

त्रेतायुग में बलि नामक एक दैत्य था। वह मेरा परम भक्त था। विविध प्रकार के वेद सूक्तों से मेरा पूजन किया करता था और नित्य ही ब्राह्मणों का पूजन तथा यज्ञ के आयोजन करता था लेकिन इन्द्र से द्वेष के कारण उसने इन्द्रलोक तथा सभी देवताओं को जीत लिया। इस कारण सभी देवता एकत्र होकर सोच विचार कर भगवान् के पास गए। बृहस्पति सहित इन्द्रादिक देवता प्रभु के निकट जाकर और नतमस्तक होकर वेद मन्त्रों द्वारा भगवान् का पूजन और स्तुति करने लगे। अतः मैंने वामन रूप धारण करके पाँचवाँ अवतार लिया और फिर अत्यन्त तेजस्वी रूप से राजा बलि को जीत लिया।

इतनी वार्ता सुनकर राजा युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन! आपने वामन रूप धारण करके उस महाबली दैत्य को किस प्रकार जीता? श्रीकृष्ण कहने लगे- मैंने बलि से तीन पग भूमि की याचना करते हुए कहा-ये मुझको तीन लोक के समान है और हे राजन्! यह तुमको अवश्य ही देनी होगी। राजा बलि ने इसे तुच्छ याचना समझकर तीन पग भूमि का संकल्प मुझको दे दिया और मैंने अपने त्रिविक्रम रूप को बढ़ाकर यहाँ तक कि भू लोक में पद, भुवर्लोक में जंघा, स्वर्गलोक में कमर, महःलोक में पेट, जनलोक में हृदय, यमलोक में कंठ की स्थापना कर सत्यलोक में मुख, उसके ऊपर मस्तक स्थापित किया। सूर्य, चन्द्रमा आदि सब ग्रह गण, योग, नक्षत्र, इन्द्रादिक देवता और शेष आदि सब नागगणों ने विधिक प्रकार से वेद सूक्तों से प्रार्थना की। तब मैंने राजा बलि का हाथ पकड़कर कहा कि हे राजन्! एक पग से पृथ्वी, दूसरे से स्वर्गलोक पूर्ण हो गए। अब तीसरा पग कहाँ रखूँ? तब बलि ने अपना सिर झुका लिया और मैंने अपना पैर उसके मस्तक पर रख दिया जिससे मेरा वह भक्त पाताल को चला गया। फिर उसकी विनती और नम्रता को देखकर मैंने कहा कि हे बलि! मैं सदैव तुम्हारे निकट ही रहूँगा। विरोचन पुत्र बलि के कहने पर भाद्रपद शुक्ल एकादशी के दिन बलि के आश्रम पर मेरी मूर्ति स्थापित हुई। इसी प्रकार दूसरी क्षीण सागर में शेषनाग के पृष्ठ पर हुई। हे राजन्! इस एकादशी को भगवान् शयन करते हुए करवट लेते हैं इसलिए तीनों लोकों के स्वामी भगवान् विष्णु का उस दिन पूजन करना चाहिए। ताँबा, चाँदी, चावल और दही का दान करना उचित है। रात्रि को जागरण अवश्य करना चाहिए। जो विधिपूर्वक इस एकादशी का व्रत करते हैं वे सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाकर चन्द्रमा के समान प्रकाशित होते हैं और यश पाते हैं।

तत्त्वज्ञानी श्रीकृष्ण

- श्री पांडुरंग शास्त्री आठवले

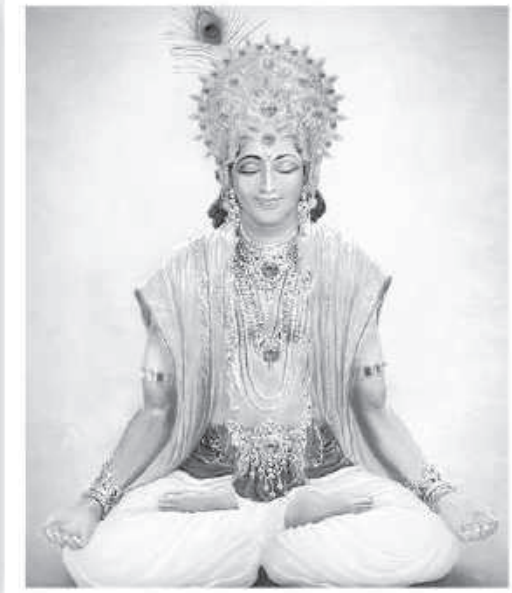

कृष्ण का नाम आते ही एक भावविभोर अवस्था बन जाती है। कृष्ण पूर्णावतार हैं। कृष्ण जैसा समाजोद्धारक कृष्ण के जैसा नीतिज्ञ तथा कृष्ण जैसा राजनितिज्ञ भी नहीं हुआ है। अध्यात्म के लिए कृष्ण भगवान् का जीवन ही देखना चाहिए। 'कृष्ण' नाम और 'कृष्ण भगवान्' यह एक लाजवाब चरित्र है। रत्नों में **कृष्ण कौस्तुभ मणि हैं। कृष्णावतार भारत का भूषण हैं और महाभारत का वैभव हैं।**

कृष्ण चरित्र के चार पहलू हैं प्रथम पहलू में उन्होंने भक्तों पर प्रेम की वर्षा की है। कृष्ण भगवान् प्रेम के प्रतीक हैं। जन्म से लेकर देहोत्सर्ग तक उन्होंने सभी को प्रेम ही दिया है, दूसरा कुछ नहीं। कृष्ण प्रभावी राजनीतिज्ञ थे, यह उनका दूसरा पहलू है। तीसरा पहलू यह है कि दैवी काम करने वालों के वे सखा थे। जहाँ-जहाँ दैवी कार्य चलता होगा, वहाँ मैं खड़ा रहूँगा। ऐसी उनकी प्रतिज्ञा है। वे मानव वंश के उद्धारक हैं, यह उनका चौथा पहलू है। गीता कहकर उन्होंने मानव वंश का उद्धार किया है।

आपको तत्त्वज्ञानी बनना है तो कृष्ण भगवान् का जीवन देखिए। वे जगद्गुरु हैं। लोगों को कृष्ण भगवान् तत्त्वज्ञानी नहीं लगते, क्योंकि उन्होंने गृहस्थी की है, लड़ाइयाँ लड़ी हैं, भिन्न-भिन्न दु:ख उठाए हैं। यह देख- सुनकर लोगों को लगता है कि वे भगवान् कैसे हो सकते हैं? तत्त्वज्ञानी का अर्थ क्या है? वह उच्च आसन पर बैठा हुआ होना चाहिए। शान्तम्-शान्तम् बोलते रहने वाला होना चाहिए, तभी वह तत्त्वज्ञानी कहलाता है। जो हँसता है, खेलता है, वह तत्त्वज्ञानी कैसे हो सकता है? यह जो कल्पना तत्त्वज्ञानी की है, उसका कृष्ण भगवान् ने वस्त्रहरण किया है।

मनुष्य पुरुषार्थी होना चाहिए। माता-पिता को आनन्द देने वाला होना चाहिए। यदि लड़का माँ को छोड़ता ही नहीं, उसी के पास बैठा रहता है तो कैसे चलेगा? उसको पुरुषार्थी बनना चाहिए। तभी माता-पिता को गौरव लगता है। पुरुषार्थी के साथ-साथ मनुष्य को विनयशील बनना चाहिए। नहीं तो लड़का पुरुषार्थी बनता है और पिता को जेलखाने में डाल देता है। अनादि काल से ऐसा चलता आया है। कोई कहेगा, हमने पिता को जेलखाने नहीं डाला है। हमारे सबके पिता जेलखाने में ही हैं। खाओ, पीओ और रहो। सबको खाना मिलेगा। सोने को मिलेगा। बैठे रहो, और तुम्हें क्या चाहिए। ऐसा पिता को कहा गया तो वह जेलखाने में ही है। तत्त्वज्ञान का यदि यही परिणाम होगा, तो परिवार ही समाप्त हो जाएगा। उसको तत्त्वज्ञान ही नहीं कहते। यही कृष्ण भगवान् का कहना है। कृष्ण भगवान् ने परिवार को स्वीकारा है।

यही वजह है कि शुकदेव ने कहा कि कृष्ण लीला सुनने पर उनके प्रति विश्वास निर्माण होगा और जीवन को एक मोड़ मिलेगा तभी अन्तिम समय कृष्ण भगवान् का स्मरण होगा। कृष्ण लीला का अर्थ हम समझते हैं कि कृष्ण ने शकटासुर और पूतना मौसी को किस तरह मारा, उसका वर्णन कथा के रूप में सुनना। वास्तव में कृष्ण लीला का अर्थ है कृष्ण का जीवन। लीला शब्द का अर्थ है जीवन। जिस प्रकार भगवान् ने लीला की, उसी प्रकार वल्लभाचार्य ने भी लीला की। कृष्ण का जीवन सुना होगा तो हमारे जीवन में सुख आएगा, तब कृष्ण आयेंगे, दु:ख आएगा तो भी कृष्ण याद आयेंगे। जीवन में संघर्ष के प्रसंग आएं तो भी कृष्ण याद आयेंगे।

कृष्ण भगवान् का जीवन वास्तविक है। जीवन में वास्तविकता का सामना करना पड़ता है। कृष्ण भगवान् ने मनुष्य के सामने आने वाली परिस्थितियों का सामना किया है। अत: जिसने उनका जीवन पढ़ा होगा, जब सुख, दु:ख और संघर्ष आए तब उस परिस्थिति में श्रीकृष्ण ने कैसा आचरण किया, उसे याद आएगा। वह यदि याद आया तो मनुष्य दु:खमुक्त, व्यथामुक्त और भयमुक्त बनता है। मनुष्य आत्मविश्वास पूर्ण हो जाता है। यही सच्चा जीवन है।

सात्विक जीवन से मिलती है शान्ति

सात्विक भोजन और सादे कपड़े धारण करने से बुद्धि शुद्ध रहती है। फिर यह भी है कि अल्प आय वाला व्यक्ति यदि माँस-मछली खायेगा और इस प्रकार तामसिक भोजन, भड़कीले कपड़े पहनेगा, सिगरेट पीयेगा तो उसे अपने तथा अपने परिवार का निर्वाह करने के लिए अधिक धन प्राप्ति के साधन सोचने पड़ेंगे। फलत: उसके लिए बुद्धि को सात्विक रखना दुष्कर हो सकता है। सम्भव है वह बेईमानी करने के लिए भी बाध्य हो जाए। अधिक वेतन पाने वाला व्यक्ति भी यदि तामसिक अहार-विहार रखे तो व्यसन अधिक बड़ जायेंगे कदाचित उसे भी कुपथ का सहारा लेना पड़ेगा। सात्विक जीवन से शान्ति मिलती है और तामसिक से बेचैनी रहती है, उद्वेग रहते हैं तथा जलन और ईर्ष्या होती है। देखो, बीड़ी-सिगरेट आदि मादक वस्तुओं का प्रयोग इसी कारण ठीक नहीं हैं कि इनसे वृत्तियाँ तामसिक होती हैं। इनके सेवन से बुरी आदतें पड़ जाती हैं और गुजारा न हो सकने पर मनुष्य गलत रास्ते अपनाने को बाध्य होता है। यह भी कि तम्बाकू खाने-पीने से तेज नष्ट होता है। कहा गया है कि युद्ध में कामधेनु के कान कटने से जहाँ अधिक रक्त गिरा था वहीं तम्बाकू उगा और पनपा।

भोजन शुद्ध मन से, शुद्ध स्थान पर और शुद्ध तरीके से तैयार किया जाना चाहिए। दक्षिण भारत में पर्दा लगाकर भोजन बनाने की प्रथा है। भोजन केवल स्वयं के लिए बनाकर अकेले खाना उचित नहीं है। ठाकुर जी को भोग लगाया हुआ भोजन प्रसाद के रूप में ग्रहण करना ही उचित है। माँस भक्षण मात्र इसी कारण उचित नहीं है कि इसमें तामसिक वृत्तियों को पोषण मिलता है, बल्कि साथ ही यह बात भी है कि हिंसा बहुत बड़ा अधर्म है। इस प्रसंग में मनु के आठ प्रकार के दोष बताये हैं जिनमें हत्याकारी, भक्षक, व्यापारी, पाचक आदि सम्मिलित हैं। स्वास्थ्य लाभ या सिद्धि प्राप्ति के लिए भी हिंसा विहित नहीं है। बिना दया के सिद्ध व्यक्ति भी कसाई के समान है। बुरा काम करने का फल कितना भी अच्छा दृष्टिगोचर क्यों न हो, उसे कदापि नहीं करना चाहिए। रावण विद्वान था, देवों की पूजा करता था फिर भी वह राक्षस था क्योंकि उसमें तीन दोष थे-

वह माँसाहारी तथा मद्यपायी था। उसने पर स्त्री हरण किया और शरीराभिमानी था। शरीर का अभिमान भी महान् दोष है। जो सच्चा ज्ञानी है, वह जानता है कि शरीर नश्वर है फिर इस पर अभिमान कैसा? रावण को कुम्भकरण जैसे भाई और मेघनाथ जैसे पुत्र का अभिमान था।

राम के भक्त को अपना जीवन सात्विक रखना चाहिए। राम नाम लेने वाला यदि यह सोचकर दुष्कर्म करता है कि उसके अपराध नाम के जपने से धुल जायेंगे तो यह भारी भूल है। वस्तुत: कहा गया है कि ऐसे मनुष्यों के पाप वज्र हो जाते हैं और स्वयं यमराज भी उनका परिमार्जन नहीं कर सकते। पाप उसी के क्षय होते हैं जो भगवान को अपना मन-प्राण अर्पित कर उनकी शरण ग्रहण करता है।

इच्छाओं का तो कोई अन्त नहीं है। अत: अपनी हरेक इच्छा की पूर्ति के लिए बुरे साधनों को भी अपना लेना पापकर्म है। अत: इच्छाओं को पाला ही क्यों जाये? वासना ही तो दु:ख देती है। इसी जड़ को काट दो किन्तु यह ज्ञान की कुल्हाड़ी से कटती है। मन में अच्छे विकल्प भी होते हैं और बुरे भी। मन भोजन स्वच्छ, पवित्र और सादा नहीं होता तो मन भी दूषित हो जाता है और उसमें बुरे विचार उत्पन्न होने लगते हैं। स्वस्थ विचार स्वस्थ मन से उत्पन्न होता है। स्वस्थ शरीर में रहता है और उसी का शरीर स्वस्थ रहता है जिसकी इन्द्रियाँ वश में है और जो केवल जीवित रहने के लिए भोजन करता है। सादा भोजन और सादा जीवन सत्वगुण की वृद्धि करता है। इससे मन निर्मल होता है तथा शुभ चिन्तन में लगता है और स्वत: शुभ कर्मों में लग जाता है। इस प्रकार मन-वचन-कर्म की एकता की नींव सादा भोजन पर है। जो पुरुष एक बार क्रोध के चक्कर में पड़कर अधर्म करने लगता है तो उसका परिवार ही नष्ट हो जाता है। कामी पुरुष राग के अधीन रहकर विषयों का सेवन करता है। विषयों के कारण ही क्रोध और विषाद की उत्पत्ति होती है। पंचभूतों के विकार भी देह में। जैसे वन में रहने वाले संन्यासी एवं योगी शरीर बचाने के लिए स्वादहीन रुखा-सूखा भोजन खा लेते हैं उसी प्रकार संसारी मनुष्य को भी परिश्रम में संलग्न रहकर रोगी के औषधि सेवन के समान केवल शरीर रक्षा के लिए सात्विक भोजन करना चाहिए।

तुलसी के पत्ते से भी हल्के हैं भगवान् श्रीकृष्ण

पं० प्रेमकिशोर 'पटाखा'

बड़ा ही रोचक प्रसंग है। एक बार रानी सत्यभामा के मन में यह अभिमान आ गया कि भगवान् श्री कृष्ण को वही सबसे प्रिय हैं। इसी बीच 'नारायण-नारायण' की रट लगाते, वीणा के तार बजाते मुनि श्री नारद घूमते-फिरते आ गये। रानी सत्यभामा ने पूछ लिया- 'मुनि श्री! मुझे हर जन्म में श्रीकृष्ण पति के रूप में मिलें। इसका कोई उपाय बताइए।'

सुनकर मुनि श्री बोले- देवी! जिसका दान इस जन्म में करेंगी, अगले जन्म में वही आपको प्राप्त होगा। यदि अगले जन्म भी पति के रूप में भगवान् श्री कृष्ण को चाहती हैं तो आपको उनका दान करना होगा।

मुनि श्री यह आप क्या कहते हैं और दान भला कौन लेगा? सत्यभामा बोलीं।

इसकी चिन्ता मत कीजिए। आप चाहे तो यह दान मुझे ही कर सकती हैं। मुनि श्री ने कहा।

ठीक है, कहकर रानी ने इसका संकल्प भी कर दिया। भगवान् श्री कृष्ण को लेकर मुनि श्री जाने लगे।

यह क्या, आप तो मेरे पति को ही लेकर जाने लगे।

हाँ, आप इन्हें मुझे दान कर चुकी हैं। इनके ऊपर अब मेरा अधिकार है।

रानियों ने सुना तो वे अचम्भे में आ गयीं। हाय रानी सत्यभामा ने यह क्या कर दिया। हमारे भगवान् को ही दान में दे दिया। सभी मिलकर मुनि श्री से प्रार्थना करने लगीं। हमारे श्री कृष्ण को हमें लौटा दीजिए।

स्वयं भगवान् श्री कृष्ण भी नारद की यह लीला देखकर मन ही मन मुस्कुराने लगे। नारद भी प्रसन्न थे। अब देखें इसका हल कैसे निकलता है।

मुनि श्री नारद बोले- मैं एक शर्त पर भगवान् श्री कृष्ण को वापस दे सकता हूँ, मुझे इनके वजन का स्वर्ण दान करना होगा।

सुनकर रानियाँ प्रसन्नता से खिल ऊठीं। हल भी मिला तो इतना सरल। केवल भगवान् श्री कृष्ण के वजन के बराबर सोना दान करना होगा।

रानियाँ दौड़ी-दौड़ी महल में गयीं। अपने स्वर्णाभूषणों को इकट्ठा किया। तराजू के पलड़े में रखने लगीं। दूसरे पलड़े में तो स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण विराजमान थे।

तराजू के पलड़े में स्वर्णाभूषणों का ढेर लग गया। मगर भगवान् श्रीकृष्ण टस से मस नहीं हुए। रानियाँ घबराने लगीं।

अब क्या होगा? हमारे पास जितना भी सोना था, सभी पलड़े में आ गया।

रानी रुक्मिणी समझ गईं। भगवान् का पलड़ा भारी क्यों है? भला भगवान् को किसी ने सोने से तोला है। वे तो प्रेम के सागर हैं। प्रेम से तुल जाते हैं। पद्चाप किए बिना ही वे तुलसी के बिरवे में से एक पत्ता तोड़कर स्वर्णाभूषणों के साथ पलड़े में रख दिया। तुलसी का पत्ता पलड़े में रखते ही चमत्कार हो गया। भगवान् श्रीकृष्ण का पलड़ा ऊपर उठ गया। सभी रानियाँ खुशी से उछल पड़ीं।

उसी क्षण से तुलसी भी अनमोल हो गयीं। आज भी भगवान् के चरणामृत में तुलसी को समर्पित करते हैं।

कुरुक्षेत्र की दिव्य धरा पर हुआ

श्री राम कथा मानस गीता

का अद्‌भुत एवं अलौकिक आनन्द

ज्ञान, वैराग्य, माया, जीव व ईश्वर भेद तथा भक्ति एवं भक्ति के साधनों पर चर्चा

श्री राम कथा मानस गीता की नव - दिवसीय यात्रा का अष्टम पड़ाव

गतांक से आगे...

- सुमित गोयल

श्री राम कथा मानस गीता रूपी यात्रा के अष्टम पड़ाव में सर्वप्रथम गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज ने इस महा अनुष्ठान में व्यासपीठ पर आसीन मुरारी जी बापू व संत परम्परा से कथा में शामिल हुए परम श्रद्धेय राजेन्द्र दास जी महाराज, परम पूज्य खुशहाल दास जी महाराज, भाई जोगा सिंह जी महाराज, जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंह जी, परम आदरणीय ज्ञानेश्वर जी महाराज एवं महेश मुनि जी महाराज का अभिनन्दन किया। उन्होंने प्रेम के महत्व पर विस्मृत चर्चा की। उन्होंने बताया जब मनुष्य वास्तविक आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है तो शब्द मौन में चले जाते हैं। मौन वाक्य कथा वाचन को ही एक अद्‌भुत रूप है जिसे कुशल श्रवणकर्ता अपने रोम-रोम से सुन पाते हैं। जिस कारण दिव्य अनुभूति से अश्रुपात होता है। अत: श्रवणकर्ता अपने इष्ट के दिव्य प्रेम की अलौकिक अनुभूति को प्राप्त होता है।

व्यासपीठ पर आसीन मुरारी जी बापू ने कहा कि मानस गीता की उद्‌भव भूमि पंचवटी है जहाँ कलकल करती बह रही गोदावरी रमणीय है। लक्ष्मण को निमित्त बनाकर श्रीराम सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए ज्ञान, वैराग्य, माया ईश्वर व जीव भेद तथा भक्ति की व्याख्या करते हैं, यह मानस गीता है। श्रीराम ने बताया कि जहाँ मान नहीं, वहाँ ज्ञान है। अर्थात जिस व्यक्ति की दृष्टि में सब सुख व विषाद मूल्यहीन हैं उस व्यक्ति को वास्तविक ज्ञान प्राप्त है। जिस व्यक्ति ने तिनके की तरह घर सब सिद्धियाँ छोड़ दी हैं एवं गुणातीत हो गया अर्थात जो तमोगुण, रजोगुण व सत्वगुण से मुक्त है, वह परम वैरागी है। जो तीन वस्तुओं मैं अर्थात जीव, माया अर्थात जगत एवं ईश्वर अर्थात जगदीश को न जाने, वह जीव है। जो माया के प्रेरक रूप से भी ऊपर है एवं सर्वोपरी है वह ईश्वर है। जिस कारण से परमपिता परमात्मा भक्त के वश में हो जाते हैं यह भक्ति का स्वरूप है। भक्ति के साधनों की व्याख्या करते हुए व्यासपीठ ने कहा कि सर्वप्रथम किसी ब्रह्मनिष्ठ अर्थात ज्ञानी पुरुष की शरण में जाना होगा जो स्वधर्म की शिक्षा देगा। जिससे विषय से वैराग्य पैदा होगा और भगवद् धर्म में अनुराग बढ़ेगा। श्रवणादि भजन में रुचि बढ़ेगी एवं साधु के चरणों में प्रेम होने लगेगा। मन, कर्म और वचन से भजन में दृढ़ प्रीति हो जाएगी। माता, पिता, गुरु, एंव सखा सब भगवान में ही दिखने लगेंगे। भजन से अश्रुपात होने लगेगा। सब कामना व कामनामद छूट जाएगा तो मैं उसके बस में हो जाऊँगा। इस प्रकार से भक्ति प्राप्त होती है। इश्वर कहते हैं जो मन, कर्म और वचन से मुझ में विश्वास करे मैं उसके हृदय में निवास करता हूँ। मैं सबके हृदय गर्भ में हूँ परन्तु जब मुझमें प्रीति बढ़ेगी तब तुम्हें मेरी अनुभूति होगी।

उन्होंने गुरु के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सतगुरु सब बन्धनों से मुक्त करवाता है। गुरुपद सभी पदों मातृपद, पितृपद, पतिपद, राजपद, विप्रपद व परमपद में सर्वोपरि है। गुरु के आँगन का जल भी गंगाजल है। गुरु सोपान की रज मस्तक पर धारण करने से प्रारब्ध भी बदल जाता है। गुरु के वाक्य अर्थ वादात्मक वाक्यों, वेदान्त वाक्यों, सिद्धान्त वाक्यों से भी ऊपर मौन वाक्य हैं। मौन में सम्पूर्ण सत्य समाहित होता है। गुरु मौन को भी सुनना सिखा देते हैं। गुरु के

मौन शब्दों को कानों, आँखों अथवा बुद्धि से ही नहीं अपितु रोम-रोम से सुनना चाहिए।

श्रीमद्भगवद गीता अद्भुत व अनुभूत है। कलियुग में भी कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग उतने ही महत्त्व का विषय है जितना त्रेता व द्वापर युग में था। आज के युग में सहजयोग की सबसे अधिक आवश्यकता है।

व्यासपीठ से श्री राम कथा का अद्भुद व मनोहर वर्णन करते हुए कहा कि अयोध्या राम प्राकट्य उत्सव में एक माह तक डूबी रही। गुरु वशिष्ट जी ने राजा दशरथ के चारों पुत्रों को वेदों के महाकाव्य एवं परमसूत्र की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि दो शब्दों का नाम राम महामंत्र है। लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न राम नाम जपने वाले के लक्षण है। भरत वह हैं जो सब का पोषण करें और किसी को भी शोषण न करें। शत्रुघ्न वह हैं जो किसी से शत्रुता न रखें। लक्ष्मण समस्त जगत् का आधार हैं। प्रत्येक मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिए कि वह किसी का आधार अवश्य बने। श्री राम कथा को आगे बढ़ाते हुए व्यासपीठ ने चारों भ्राताओं के यज्ञोपवीत संस्कार एवं बाल क्रीड़ाओं का भावपूर्ण वर्णन किया। राजा दशरथ ने विश्वामित्र के द्वारा राम लखन माँगे जाने पर उन्हें अनुनय पूर्वक विश्वामित्र को सौंप दिया। जिसके पश्चात् श्रीराम व लक्ष्मण ने ताड़का वध एवं अहिल्या का उद्धार किया तथा विश्वामित्र का यज्ञ राक्षसों का वध कर पूर्ण करवाया। व्यासपीठ ने संकेत किया कि ऋषि विश्वामित्र के पास शास्त्र, शस्त्र, मंत्र, सूत्र, साधन व साधना सर्व थे परन्तु उनका यज्ञ पूर्ण राम लखन के आगमन के पश्चात हुआ। भाव यह है कि जीवन यज्ञ तभी सफल होगा जब जीवन में राम अर्थात सत्य और लखन अर्थात समर्पण आएंगे। पुष्पवाटिका में श्रीराम सीता का प्रथम मिलन हुआ और श्रीराम ने शिव धनुष भंग कर माता सीता का वरण किया। तत्पश्चात मुरारी जी बापू ने राम बनवास, चित्रकुट पर्वत पर भरत मिलाप, सीता हरण, लंका दहन, रावण वध व श्रीराम के राजतिलक की संक्षिप्त कथा बखान की। उन्होंने चारो भाइयों को दो-दो पुत्र प्राप्त होने का वर्णन करते हुए अष्टम दिवस की कथा को विश्राम दिया।

अजा एकादशी

10 सितम्बर, 2023

- बाबा श्री श्यामरमण दास

युधिष्ठिर ने भगवान् श्री कृष्ण से कहा- जनार्दन! अब मैं भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी के विषय में सुनना चाहता हूँ।

भगवान् श्री कृष्ण बोले - राजन्! भाद्रपद कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम 'अजा' है। वह समस्त पापों का नाश करने वाली है। जो भगवत्पूजन सहित इसका व्रत करता है, वह निष्पाप होकर भगवद्धाम को जाता है।

पूर्वकाल में अयोध्या के चक्रवर्ती सम्राट सत्यवादी हरिशचन्द्र ने अपनी सत्यप्रतिज्ञा की रक्षा करने के लिये अपने राज्य का दान कर दिया। फिर दक्षिणा देने के लिये अपने पुत्र सहित पत्नी को और अपने आप को भी बेच दिया। इतने पुण्यात्मा होते हुए भी किसी कर्म वश उन्हें चाण्डाल की दासता करनी पड़ी। वे मुर्दे का कफन लिया करते थे। इतने पर भी वे सत्य से विचलित नहीं हुए। इस प्रकार दुःख के दिन काटते हुए सोचने लगे कि किस प्रकार मैं इस दुःख से मुक्त हो पाऊँगा। सौभाग्य से उन्हें महर्षि गौतम के दर्शन हो गए। महर्षि को प्रणाम करके राजा ने अपना कष्ट सुनाकर उससे छूटने का उपाय पूछा। महर्षि ने कहा- राजन्! भादों के कृष्ण पक्ष की अत्यन्त कल्याणमयी 'अजा' नामक एकादशी आ रही है। इसके व्रत से पापों का क्षय हो जाता है और महान् पुण्य प्राप्त होता है। आज से सातवें दिन एकादशी है उस दिन व्रत करके रात में जागकर भजन करना।

ऐसा कहकर महर्षि चले गये और राजा ने उनके आदेशानुसार अजा एकादशी का व्रत किया और रात को जागकर भजन किया। इसके प्रभाव से उसके सारे दुःख दूर हो गये। उसे पत्नी की प्राप्ति हो गई, पुत्र का जीवन मिल गया। और निष्कण्टक राज्य भी मिल गया।

(गीता उपदेश का पूर्व वृत्तान्त)

महाभारत सार

—पू. श्रीनारायण स्वामी जी

गताङ्क से आगे :—

अन्यथा हे भामिनी ! इस समय तुरन्त तुम ऐसे दूसरे पति को स्वीकार करो जो तुमको जुए में हारकर दासी बनाने वाला न हो अथवा दासी का कोई खास पति नहीं होगा, सो तुम वही वृत्ति ग्रहण कर लो। देखो, युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव सब हारकर दास हो गये हैं। उनके साथ ही तुम भी दासी हो चुकीं। जुए में अपने को हारे हुए पाण्डव इस समय तुम्हारे पति नहीं रहे। कुन्ती-पुत्र युधिष्ठिर ! क्या ऐहिक जीवन का कुछ प्रयोजन नहीं समझते थे? पराक्रम और पौरुष की परवाह न करना क्या उनके योग्य काम हुआ है? यदि वे ऐसा न समझते हो तो पांचालराज द्रुपद की कन्या को जुए के दाँव पर क्यों लगा देते ?''

कर्ण के ये वचन सुनकर अत्यन्त क्रोधी भीमसेन आर्तभाव धारण करके बारम्बार लम्बी साँस लेने लगे। क्या करते, राजा युधिष्ठिर के अनुगत और धर्म-पाश में बन्धे हुए होने के कारण वे कुछ नहीं कर सकते थे। उनकी आँखें लाल हो गई। वे इस प्रकार युधिष्ठिर की ओर देखने लगे, मानों उनको जलाकर भस्म कर डालेंगे। भीमसेन ने युधिष्ठिर से कहा- 'राजन्, मैं सूत पुत्र कर्ण के ये वचन सुनकर उस पर क्रोध नहीं करता, क्योंकि हम सचमुच हार कर दास हो चुके हैं और कर्ण जो कह रहा है, वह दास धर्म ही है। परन्तु हे नरेन्द्र ! मुझे क्रोध आपके ऊपर है, क्योंकि जो आप द्रौपदी को दाँव पर रखकर जुआ न खेलते, तो शत्रुओं की क्या मजाल थी कि ऐसे दुर्वचन कहकर हमारा अपमान करते।''

भीमसेन के ये वचन सुनकर, अचेत से चुप बैठे युधिष्ठिर को राजा दुर्योधन बोला- राजन् ! भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव, सब तुम्हारे अधीन हैं। इसलिये अब तुम्हीं इस प्रश्न का उत्तर दो कि द्रौपदी हारी हुई में गिनी जा सकती है या नहीं ?'' युधिष्ठिर से यों कहकर ऐश्वर्य के मद से मस्त दुर्योधन केले के खम्बे के समान बनी हुई बाईं जाँघ पर से कपड़ा हटाकर उसने द्रौपदी की ओर देखा और घृणित इशारा किया।

यह देखकर क्रोधी भीमसेन आगबबूला हो उठे। वे लाल-लाल आँखें फाड़कर दुर्योधन की ओर देखते हुए, सब सभासदों को सुनाकर, ऊँचे स्वर में कहने लगे-'रे दुर्योधन ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि यदि मैं महायुद्ध में गदा से तेरी यह जाँघ न तोड़ डालूँ तो मुझे मरने पर अपने पितरों के लोक न प्राप्त हों।''

क्रमशः

(एकाग्रता पूर्वक पढ़ते रहें, जिज्ञासा बनाये रखें—सम्पादक)

समुद्र में हीरे-मोती, जवाहरात का अपार भण्डार है। किनारे खड़े रह कर नहीं प्राप्त होगा। आवश्यकता है भीतर गहरा उतरने की।

-गीता मनीषी

मन क्या है?

गतांक से आगे -

सद् तथा असद् संस्कार

—स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी (डिवाइन लाइफ)

शक्तियों की भाँति संस्कार भी एक-दूसरे की सहायता अथवा निरोध करते हैं। जब आप किसी मनुष्य को गम्भीर रोग से ग्रसित देखते हैं तो आपके मन में दया का संचार हो जाता है, आपके पुराने दयामय कर्मों के सभी संस्कार परस्पर सम्मिलित हो जाते हैं तथा आपको रोगी की सहायता और सेवा करने को बाध्य कर देते हैं। इसी प्रकार, जब आप किसी मनुष्य को गम्भीर दुःख तथा तङ्गहाल-दशा में देखते हैं तो आपके पुण्य कर्मों के सारे संस्कार अवचेतन मन ऊपर आ जाते हैं और आपको उसकी सहायता के लिए बाध्य कर देते हैं। आप अपनी सम्पत्ति में से उसे भी एक भाग देने लगते हैं।

जब किसी सद् कार्य का संस्कार उभरा हुआ हो तो उसका विसदृश संस्कार भी प्रकट हो सकता है और उसके पूर्वागत संस्कार भी पूर्णता में बाधक हो सकता है। यह सद् तथा असद् संस्कारों की टक्कर है।

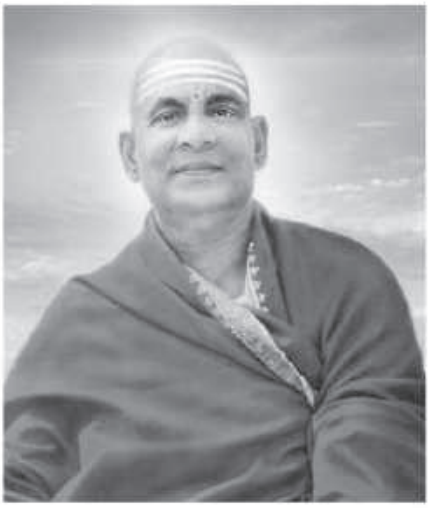

जब आप अपना मन परमात्मा में स्थिर करने की चेष्टा करते हैं और पवित्रता की भावना करते हैं, ठीक उसी क्षण में सारे कुत्सित विचार और संस्कार आपके विरुद्ध लड़ने के लिए उग्रता तथा प्रतिशोध-भावना के साथ फूट पड़ते हैं। इसे संस्कारों का जमघट कहते हैं। अच्छे संस्कार भी आपकी सहायता और कुसंस्कारों को भगाने के लिए इकठ्ठे हुआ करते हैं। स्वामी श्री अद्वैतानन्द जी के पिता चण्डी के बड़े भक्त थे। मृत्युकाल में वह अर्धचेतन-अवस्था में थे। युवावस्था में जितने चण्डी के स्तोत्र के श्लोक उन्होंने कठस्थ किये थे, वह उन सबकी आवृत्ति करने लगे। यह आध्यात्मिक संस्कारों का जमघट है।

क्रमशः

मन्त्र जाप एवं ध्यान साधना द्वारा भीतर के गहन साम्राज्य में प्रवेश करो। विश्वास रखो- भीतर सब कुछ है- ऊर्जा, ओज, प्रकाश, ज्ञान-आनन्द।

-गीता मनीषी

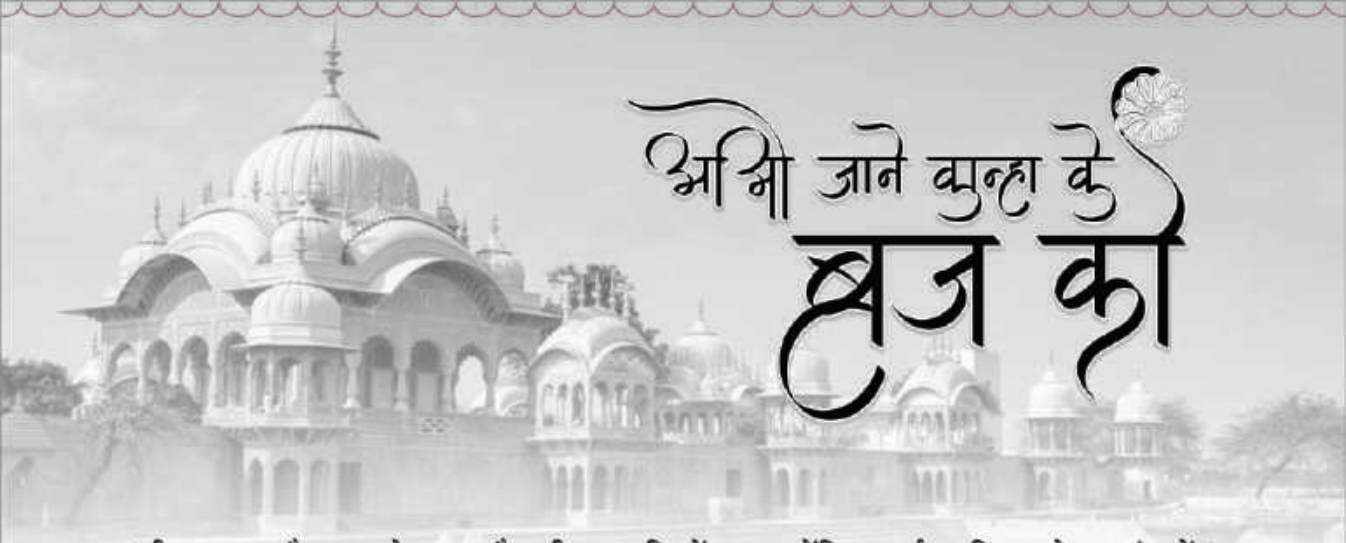

अभी जाने वृन्दा के ब्रज को

(श्रीवृन्दावन और ब्रज के भाव और लीला स्थलियों का सांकेतिक वर्णन पत्रिका के हर अंङ्क में।)

गताङ्क से आगे :—

रामेश्वर मन्दिर – यहाँ पर महादेव जी का मन्दिर है।

सेतुबन्ध – एक सीध में पड़े बड़े-बड़े पत्थर सेतुबन्ध के भग्नावशेष के प्रतीक हैं।

लुकलुक कुण्ड – वृक्षों की सघनता वाले इस स्थल में श्रीकृष्ण अपने सखाओं के साथ लुका-छिपी का खेल खेलते थे। वृक्षों की सघनता अथवा पर्वत की कन्दरा में छिपते तथा पर्वत ऊपर प्रकट होते।

चरणकुण्ड एवं पदम्कुण्ड – ये नहर एवं चरण पहाड़ी के पहले तलहटी पर आते हैं।

वेणुकूप – यह चरण पहाड़ी के निचले पूर्वी भाग में है। यहाँ पर श्रीराधा कृष्ण का मन्दिर है।

चरण पहाड़ी – कामाँ से चरण पहाड़ी 3.5 किमी. के लगभग है। चरण पहाड़ी पर चढ़ने वं उतरने के लिये दोनों ओर सीढ़ियाँ हैं। पूर्व दिशा की सीढ़ियों की ओर लुकछुक कुण्ड है। पश्चिम दिशा की सीढ़ियों की ओर अंगरावली गाँव है। भीम पत्नी हिडिम्बा अंगरावली गाँव की थी। अब गाँव में मेव मुसलमानों की बस्ती है। पहाड़ी पर श्रीकृष्ण के चरण चिह्न अंकित होने से चरण पहाड़ी नाम पड़ा। इस पहाड़ी के चोटी पर एक मन्दिर है। इस मन्दिर में एक शिला पर उभरते हुए चार चिह्नों के दर्शन होते हैं- 1. पूरा चरण, 2. दूसरा आधा चरण, 3. गाय का खुर, 4. लकुटी।

यह श्रीकृष्ण की वेणुनाद स्थली है। यहाँ पर अर्द्धरात्रि को मधुर स्वर में वेणुनाद किया था। इससे पहाड़ी पिघल गई एवं श्रीकृष्ण के चरण आदि के चिह्न अंकित हो गये। चारों प्रकार के जीव समुदाय मोह को प्राप्त हो गये।

मनसादेवी – यह मन्दिर मुख्य सड़क पर है।

गयाकुण्ड एवं गदाधर मन्दिर- फिसलनी शिला से गया कुण्ड 4 किमी. दूरी पर है। मन्दिर के अन्दर गदाधर नारायण एवं लक्ष्मी जी के रूप में श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा जी हैं। जिस तरह गयाजी (बिहार) में पितरों के श्राद्ध-तर्पण का पुण्य है वैसा ही यहाँ पर श्राद्ध-तर्पण का पुण्य है।

श्री गोपीनाथ मन्दिर – यह गोपीनाथ मोहल्ला में स्थित है।

चौरासी खम्बा – यह कोट ऊपर स्थित है। इन खम्बों के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ हैं। पाण्डवों ने वनवास काल में कुछ समय यहाँ निवास किया था। यहाँ चौरासी खम्बों का एक विशाल विष्णु मन्दिर था। इस मन्दिर को यवनों ने ध्वस्त कर दिया। वर्तमान में केवल चौरासी खम्बों को देखा जा सकता है।

क्रमशः

साभार : सत्यनारायण, केशव धाम, श्रीवृन्दावन

श्री कृष्ण कृपा धाम समिति की ओर से प्रकाशक/मुद्रक श्री नरेन्द्र कुमार द्वारा श्री कृष्ण कृपा संजीवनी (मासिक पत्रिका) को गोयल स्टेशनरस् बी-36/9 जी.टी करनाल इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, दिल्ली 110033 से मुद्रित कर, श्री कृष्ण कृपा धाम, परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन से प्रकाशित किया।

गीता सत्संग गलास्गो (स्काटलैण्ड)

इकबाल दुर्रानी द्वारा उर्दू अनुवादित सामवेद विमोचन

RIN-UPHIN/1999/06361
Postage Regd MTR-90/23-25
Date of Publication 25th of Every Month
Date of Post 29th-30th of Every Month

घृष्णेश्वर ज्योर्तिलिंग दर्शन अभिषेक